प्रकाशन, लेखन, संकलन, सम्पादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर-313011
फोन : 0294-2450253
मोबाइल : 09461384906
Website : www.mewarjaintemple.com

पुस्तक प्राप्ति स्थल : धुप्या ज्वेलर्स,
16, बड़ा बाजार, उदयपुर

सहयोग राशि :
400/- चार सौ रूपये

सर्वाधिकार लेखन के अधीन

संस्करण - 2016

डिजाईनिंग :
वेव ग्राफिक्स, उदयपुर, मो. 09829244710

।। ॐ ह्री श्री अर्हम् श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः ।।

कलिकाल, कल्पतरु, महाप्रभाविक,
जीवित जगजयवंत, 2800 वर्ष प्राचीन जीरावला पार्श्वनाथ

गुरु आशीष

प्राचीन शास्त्रोंद्धारक देशनादक्ष आचार्य देव विजय श्री हेमचंद्रसूरीश्वर जी म.सा.

भाग्य मनुष्य को सद्‌गुणी नहीं बना सकता भाग्य तो पुण्याधीन है। भाग्य में लिखा सुख, सुविधा सामग्री, सभा संपत्ति मिलती है लेकिन सद्‌गुण मिले, इसका कोई नियम नहीं होता वरन् सद्‌गुण सत्संग संस्कार व सद्‌बुद्धि के अधीन है।

एक भाई ग्राम में रहता था, पैसा नहीं था फिर भी सुखी रहता था और जब शहर में गया तो पैसा बढ़ा और उससे जीवन में दोष आए कई रोग आए, टेंशन बढ़ा तब जीने का मन नहीं करता, दिन पूरे होगए ऐसा लगने लगा। सद्‌भाग्य से जीवन समृद्धि बनता है परंतु सद्‌गुणों से जीवन शांत, प्रशांत बनता है, वहीं भाग्य बदलने में समय नहीं लगता–रोयल स्टेट के मालिक एक शत में भूकंप आने से बिखर जाता है इसी प्रकार इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, गांधी जी जैसे व्यक्तिकाल में नहीं जाते, यह भाग्य है। भाग्य अविश्नीय होता है, भाग्य भरोसे नहीं रहना चाहिए। पैसा समाप्त हो जाएगी। जिसके पास सद्‌गुण है, संतोषी है, अनीति से व्यापार नहीं करता है तो उसे थोड़ा है तब ही अधिक लगता है।

सद्‌गुण से सदाचार आता है, संतोषी व सरल होता है जैसे वेश्या कोषा नामक गणीजना ने अपने नृत्य, कामुक पौशाक से स्थूलभद्र को विचलित नहीं कर सकी। इसी प्रकार शिवाजी जैसे सात्विक जैसे योद्धा थे उनके समय हुए युद्ध में सैनिको ने मुस्लिम महिला को बंदी बना कर शिवाजी के सम्मुख पेश किया तो शिवाजी ने उनका सत्कार कर बहिन का दर्जा देकर पुनः उनके डेरे (स्थान) पर घुड़वाया। यह सदाचारी, सद्‌गुणी की पहचान है।

भाग्य चंचल होता है लेकिन सद्‌गुण स्थायी होते है। सदाचारी, सद्‌व्यवहारी, सद्‌गुजी ही एक लक्ष्य निर्धारित करता है और उसे पूर्ण कर जीवन सार्थक करता है। ऐसे ही सद्‌गुणी, सदाचारी मोहनलाल बोल्या ने मेवाड़ का मंदिरो का इतिहास लिखने का लक्ष्य निर्धारित किया और अपने जीवन को सार्थक किया और उससे आगे बढ़कर अपनी आत्मा रूपी ज्ञान को दर्शाया है। अंनत ज्ञान, सुख और आनंद आत्मा का सबका है। अपना दुर्भाग्य है कि आत्मा स्वरूप को भूलकर देव ऋदि आदि मिले, ऐसे प्रयत्न में लोग है, यह सब छोड़ कर सम्यग्य दर्शन, ज्ञान चारित्र की आराधना में स्थिर होकर आत्मस्वरूप शाश्वत सुख को प्राप्त करे यही मेरी शुभकामना व आशीष धर्मलाभ...

जैननगर, अहमदाबाद
14/06/2016

आचार्य हेमचंद्र सूरि
(आ. हेमचंद्र सूरी)

प्रस्तावना एवं आशीष

वर्धमान तपोनिधि
आचार्यदेव श्री विजयकल्याणबोधि
सूरीश्वर जी म.सा

प्रभु के मंदिरों और प्रतिमाएँ आर्य संस्कृति की प्रतीक है। समाज की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक धरोहर है। हमारे पुरोधा ने भक्ति भाव से मंदिर व प्रतिमाओं का जतन व संरक्षण किया है जो प्रभाविक रूप से अमूल्य निधि है। धर्म के दानवीर श्रेष्ठियों ने मंदिरों व प्रतिमाओं का भक्तिपूर्वक सृजन कराया। सृजन करना व कराना एक महत्वपूर्ण क्रिया है। जिससे प्रभु की पूजा, भक्ति होती रहती है। सृजन से अधिक महत्वपूर्ण संरक्षण व पूजा का होता है। संरक्षण के प्रति समाज उदासीन ही दिखाई देता है।

धर्मांध व अनार्यों ने मंदिरों को खण्डित किया उसको समाज व भक्तजनों ने पुनः सृजन किया और संरक्षण किया, लेकिन ''वर्तमान में क्या किसी भी ट्रस्टी को पूछो कि यह मूर्ति कितनी पूरानी है'' ? इसमें क्या विशेषता है ? मंदिर किसने बनाया ? किसने प्रतिष्ठा कराई ? कब प्रतिष्ठा हुई ? तो वह सिर खुजलाता हुआ बोलेगा कि पता नही, पूछकर बताऊँगा।''

मंदिरों में कई प्रतिमाएं है जिनमें नूतन, प्राचीन व अति प्राचीन भी होती है, यदि ट्रस्टी को पूछे कि मंदिर में कुल कितनी प्रतिमाएं है, कोई Antique भी है तो वे अज्ञान होकर चुप रहते है। अच्छा यह है कि प्रत्येक मंदिर का स्टॉक रजिस्टर हो और ट्रस्टीगण समय समय पर आकस्मिक निरीक्षण करे तो सभी के बारे में जानकारी हो सकती है।

किसी एक मंदिर में मूर्ति की चोरी हो जाए तो किसी ट्रस्टी को कोई फर्क नहीं पड़ता, पेट का पानी भी नहीं हिलता, दूसरी ओर किसी ट्रस्टी का महंगा मोबाइल खो जाए तो वह धरती आसमान एक कर देता है कि मोबाईल कहां है और कौन ले गया ? लेकिन मूर्ति खोने पर कोई असर नहीं होता है तो समझना कि प्रभु प्रति कोई भक्ति भाव नहीं है। कई वर्षों पहले की बात है कि गुजरात में खम्भात नगर में स्तभंन पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर में से तक चोरी हो गई, प्रयत्न करने पर भी नहीं मिली तब वहां के भक्तगणों, जिसमें 8 वर्ष के बालक से लगाकर 80 वर्ष तक के बुजुर्गों ने अन्न-जल त्याग दया और तप के बल से दो दिन में मूर्ति मंदिर में आ गई, बाद में उसकी पुनः प्रतिष्ठा कराई गई। यह है मंदिर व प्रतिमाओं के प्रति भक्तों का भाव। ट्रस्टीगणों को प्रतिमाओं की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए, ट्रस्टीगण प्रभु के प्रति लगाव रखे, विडियोग्राफी करवाकर लेखों को संग्रहित करना चाहिए, डिजिटलाईजेशन करावे। प्रभु के प्रति इन्द्र देवताओं का भक्ति भाव कितना बेमिसाल था, कि प्रभु के जन्म कल्याणक के समय प्रभु को मेरू पर्वत पर ले जाकर स्नान कराकर पुनः माता के पास में सुला देना, यह सब भाव-भक्ति का प्रतीक है। ट्रस्टियों को मंदिर का बैंक डिपोजिट, आवक, जावक का ख्याल करते हुए पारदर्शक बनाना चाहिए ।

सुरक्षा के इस कार्य को श्रावक मोहनलाल बोल्या ने सिरोही जिले के मंदिरों के लेखों को संग्रहित कर पुस्तक में समावेश किया। प्राचीन धरोहर के लिए सुरक्षा कवच खड़ा कर अनुमोदनीय एवं स्मरणीय कार्य भी किया है। श्री मोहनलाल बोल्या ने मंदिरों के इतिहास के साथ-साथ, प्रतिष्ठा, अंजनशालाका, निर्माणकर्ता आदि का भी का समावेश कर शासन की सेवा की है जिसकी भूरी-भूरी अनुमोदना करता हूँ और इनके स्वस्थ, दीर्घायु व इनके हर क्षेत्र में सफलता की कामना करता हूँ।

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरि.

(आचार्य विजय कल्याण बोधिसूरि)

गुरु आशीष

पन्यास प्रवर श्री अपराजितविजय जी म.सा..

पन्यास अपराजित विजय जी म.सा.
श्रावक रत्न मोहनलाल जी बोल्या,

सादर धर्मलाभ ।

एक संत थे, उनका भक्त एक सम्राट था, हमेशा वह सम्राट अपने गुरू संत को याद करता था, एक बार संत वापस उस नगर के बाहर पधारे, सम्राट उसके दर्शन के लिए उनके पास आया, प्रवचन पुरा हुआ, तब सम्राट ने संत से पूछा कि है गुरूदेव ! आप कभी इस सेवक को याद करते थे ?

संत ने कहा - कभी कभार तुम्हारा स्मरण इस प्रकार से हो जाता था कि एक सम्राट जो मेरा भक्त है परंतु बाद में इस स्मरण पर मुझे रोना आ जाता था। इसलिए कि दूसरें का स्मरण इसका सीधा अर्थ यह होता था कि आपका विस्मरण प्रभु ऐसा क्यों हुआ, यह प्रसंग हमको सतत् परमात्मा के स्मरण की प्रेरणा देता है। जीवन में दो वस्तु का हर दिन स्मरण होना चाहिए, एक परमात्मा और दुसरी वस्तु अपनी मौत, परमात्मा का मंदिर परमात्मा का स्मरण करता है और श्मशान अपनी मौत का स्मरण कराता है इसलिए हर गांव, शहर, नगर में किसी भी हालत में यह दो वस्तु तो होती ही है।

उदयपुर के सुश्रावक मोहनलाल बोल्या ने उदयपुर नगर से प्रारम्भ कर देलवाडा, मेवाड के जैन तीर्थ (तीन-तीन भाग में) श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ-केशरीयाजी, नवकार मंत्र स्मारिका, वागड़ के जैन श्वेताम्बर मंदिर आदि पुस्तकों का लेखन-संपादन किया अब 'सिरोही व पाली जिलें के जैन मंदिर' पुस्तक का सम्पादन हो रहा है। वयोवृद्ध और खुद शारीरिक अस्वस्थ होते हुए भी अपने तन-मन-धन का योगदान देकर, खुब ही परिश्रम उठाकर विविध मंदिरों के चित्रों-इतिहास-का संग्रह करके पुस्तक का प्रकाशन कार्य किया है उनकी भूरि-भूरि अनुमोदना करता हुँ आपके सभी पुस्तक न उन क्षेत्र के मंदिरों की स्पर्शना करने हेतु अत्यंत उपयोगी है और यात्रालुओं के लिए उपयोग में आ रही है। घर में बैठकर भी उन सभी मंदिरों-प्रतिमाओं के दर्शन कर भाव से यात्रा करने में खुब ही उपयोगी है।

आपने समाज को यह सभी पुस्तकें भेंट करके खुब उपकार किया है। पुरा जैन समाज हमेशा के लिए आपका ऋणी रहेगा। अंत में शासन देवता से प्रार्थना करता हुँ कि आपको अच्छा स्वास्थ्य, जीवन में शान्ति। अंत समय में अच्छी समाधि को प्राप्त करें।

यही एक शुभकामना

द. अपराजित वि.म.

(द. पन्यास अपाराजित वि. म.)

ओसवाल समाज के आद्य संस्थापक आचार्य श्री रत्नप्रभ सूरि जी महाराज

प.पू. मोक्ष मार्ग के सच्चे सारथी आचार्य देव श्रीमद् विजय भुवनभानु सूरीश्वर जी म.सा.

प.पू. समता सागरपं. प्रवर श्री पद्मविजय जी म.सा

सिद्धांत महोदधि आचार्य देव श्रीमद् विजय प्रेम सूरीश्वर जी म.सा.

प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक वैराग्य देशनादक्ष आचार्य श्रीमद् विजय हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

प.पू. वर्धमान तपोनिधि आचार्य देव श्रीमद् विजय कल्याण बोधि सूरीश्वर जी म.सा.

पुरोवाक्

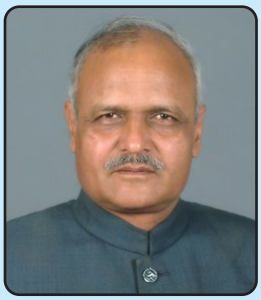

मंदिर हमारी आस्था, श्रद्धा व अस्तिकता की साकार अभिव्यक्ति हैं। राजस्थान में सिरोही व पाली के जैन श्वेताम्बर मंदिरों के इतिहास पर श्रीमान् मोहनलालजी बोल्या एवं उनके सहयोगी श्री हरकलालजी पामेचा द्वारा संकलित यह पुस्तक हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत एवं समसामयिक आध्यात्मिक चेतना के सजीव चित्रांकन की अत्यंत सशक्त माध्यम सिद्ध होगी। सिरोही व पाली दोनों ही देश के अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक नगर रहे हैं। इस संपूर्ण क्षेत्र में विविध जैन श्वेताम्बर मन्दिरों सहित अनेक अति प्राचीन सनातन मंदिरों की भी पूरी श्रृंखला व उसका अक्षुण्ण इतिहास है। यह क्षेत्र जैन मन्दिरों में भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर पर्यन्त सभी तीर्थंकरों व सनातन मंदिरों में सभी सनातन देवी–देवताओं यथा भगवान शिव, ब्रह्मा, विष्णु, दुर्गा जी सहित सभी प्रमुख देवी–देवताओं के मंदिरों से युक्त है। यह क्षेत्र अत्यंत धर्मप्राण क्षेत्रों में से है। पाली व सिरोही की ऐतिहासिक प्रचीनता के साथ ही इन जिलों के निकटतम स्थल भीनमाल, जिसका प्राचीन नाम श्रीमाल भी रहा है, विश्व के ऐतिहासिक मानचित्र का एक प्रसिद्ध स्थल है। भीनमाल महाकवि माघ व विश्व के ख्यातनाम् गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त की जन्म स्थली और उस काल में गुजरात की राजधानी होने से डेढ़ सहस्त्राब्दी भी अधिक काल से यह स्थान विश्व मानचित्र पर रहा है। ईस्वी वर्ष 598वें में जन्में भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त से ही भारत के बाहर, सम्पूर्ण विश्व को शून्य एवं दाशमिक प्रणाली सहित बीजगणित व रेखागणित का अधिकांश ज्ञान प्राप्त हुआ था। ब्रह्मगुप्त के काल में ही सिरोही व 'हाथ' नामक गाँव में बना ब्रह्माजी का मन्दिर भी इस क्षेत्र के अति प्राचीन गौरव का भी साक्षी है। अतएवं यह क्षेत्र सस्त्राब्दियों पर्यन्त हमारी आगामी पीढ़ियों के लिये सांस्कृतिक व आध्यात्मिक दिग्दर्शन एवं प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

इस संपूर्ण क्षेत्र में अवस्थित प्राचीन जैन व सनातन मंदिरों की श्रृंखला अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें हाल के वर्षों में जिन अत्यंत भव्य व मनोरम जैन श्वेताम्बर मंदिरों का निर्माण हुआ है, वे यहाँ के जैन समाज की आस्था की उदात्त अभिव्यक्ति हैं। प्राचीन जैन मंदिरों में बामनवाड़ का मन्दिर, वीरवाड़ा का मन्दिर, लौटाना का मन्दिर आदि जितने प्राचीन है उतने ही भव्य भी हैं। ये सभी मन्दिर हमारी स्थापत्य कला व शिल्प शास्त्र की अनमोल पुरातात्विक धरोहर हैं और प्राचीन काल चली से आ रही हमारी समृद्ध वास्तुकला, आध्यात्मिक चेतना, साकार विग्रह की आराधना की अनादि परम्परा और समाज की आध्यात्मक निष्ठा के द्योतक है।

इस पुस्तक के लेखक श्रीयुत मोहनलालजी बोल्या एवं उनके सहयोगी श्री हरकलालजी पामेचा द्वारा इस कृति के संकलन में अत्यंत परिश्रम पूर्वक जो चित्र संचय व लेखन कार्य किया गया है, वह अत्यंत सराहनीय है और उनके द्वारा किये सुदीर्घ अध्ययन, अवलोकन व उपासना से अर्जित श्रद्धा के समन्वय का यह अप्रतिम द्योतक है। यह पुस्तक जहाँ एक ओर हमारी प्राचीन संस्कृति के अद्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, वहीं मन्दिरों के वास्तु, आध्यात्म विद्या, प्राचीन व अर्वाचित हस्त शिल्प और इतिहास को भी प्रतिबिम्बित करती रहेगी।

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या द्वारा इस प्रकार की पुस्तकों का पूर्व में भी लेखन व सम्पादन किया गया है। वह भी अत्यन्त उत्कृष्ट रहा है। इनकी पूर्व कृतियों की भांति यह पुस्तक भी पाठकों में लोकप्रिय होगी।

अधोहस्ताक्षरकर्त्ता इन लेखक द्वय की इस श्रम साध्य कृति की रचना के लिए उनके प्रति साधुवाद व्यक्त करता है। उनके द्वारा इस प्रकार के महनीय कार्यों के लिए साधुवाद ज्ञापित करते हुये उनके दीर्घायु व सक्रिय जीवन की कामना करता हूँ कि उनका इस प्रकार का लेखन कार्य अनवरत जारी रहे।

शुभेच्छा पूर्वक

(भगवती प्रकाश)
उप कुलपति : पैसीफिक विश्वविद्यालय,
उदयपुर

शुभ संदेश

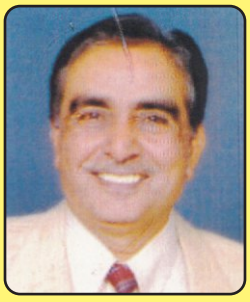

श्री बोल्या सा.,

आपका पत्र 23.4.2016 का प्राप्त हुआ।

आप द्वारा सिरोही एवं पाली जिले के श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिरों का इतिहास चित्र सहित प्रकाशित किया जा रहा है, आपक प्रयास अनुकरणीय है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक शीघ्र प्रकाशित होकर समाज के लिए मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी रहेगी।

(राज लोढ़ा)

सचिव : श्री जैन श्वेताम्बर वासुपुज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट

उदयपुर

संसार में ऐसा कोई धर्म नहीं है जिसने तीर्थ की सार्थकता को स्वीकार नहीं किया हो। प्रत्येक धर्म तीर्थ से जुड़ा है। सच तो यह है कि तीर्थ से ही धर्म को जीवन मिलता है वास्तव में तीर्थ हर धर्म का नाभिस्थल है, श्रृद्धा केन्द्र है। वह मनुष्य धन्य है, जिसके शीर्ष पर किसी तीर्थ की माटी का तिलक हुआ है।

– भारत के जैन तीर्थ–श्रृद्धा व वैभव का आभार

भावनात्मक संदेश

सेवाड़ी, जिला पाली (राज.)

सरस्वती कृपा पात्र, जिन शासन प्रेमी

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या, उदयपुर

प्रणाम

आपसे जानकारी मिली कि सिरोही जिले के जैन तीर्थों का इतिहास लेखन जारी है। इसमें पूर्व आपश्री ने मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग से 4 व वागड़ के जैन तीर्थ पुस्तकें भी लिखी है, जिसमें सम्पूर्ण जानकारी निहित है, अर्थात् गागर में सागर भर दिया है। ये पुस्तकें बहुत ही उपयोगी साबित हो रही है। प्रत्येक तीर्थ की यात्रा कर जानकारी जुटाने का ऐसा कठिन कार्य आपश्री का जैन धर्म के प्रति समर्पण रखने के कारण ही सम्भव हो सका है। पूर्व के पुण्य तथा भगवती माता सरस्वती की कृपा भी इस कार्य में सहायक रही है।

आगम का सूत्र है 'संतों व सज्जनों का जागते व जगाते रहना ही अच्छा है' इसी भव से आप स्वस्थ व दीर्घायु रहे, ताकि समाज व धर्म उपयोगी साहित्य का सृजन हो सके।

इति शुभम् !

सादर

शुभेच्छु

सोहनलाल एस. सुराणा

(सोहनलाल एस. सुराणा)

तीर्थ हमारी श्रृद्धा एवं निष्ठा का सर्वोच्च मापदण्ड है तीर्थ ही वे माध्यम है जिसके द्वारा हम अतीत के अध्ययन में आंक सकते है चेतना की ऊर्जा, सधनता और वायुमण्डल में चेतना की तरंगे तीर्थो में मिलेगी जो अन्य कही भी नहीं मिल सकती।

शुभ संदेश

डॉ. के. एस. गुप्ता
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (इतिहास)
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

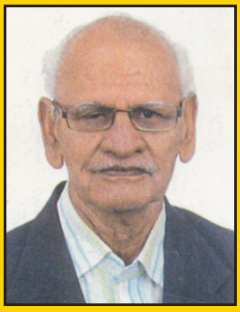

भारतीय जन–जीवन में कला का अधिक महत्व रहा है । मेवाड़ इसका अपवाद नहीं है। यहां इस क्षेत्र में वास्तुकला हो अथवा अन्य शिल्पकला की सुदृढ़ परम्परा रही है। मन्दिर स्थापत्य का विशिष्ठ महत्व रहा है। जैन मन्दिर का निम्रण प्राचीन काल से लेकर अब तक अविछन्न रूप से चला आ रहा है। कोई गाँव ऐसा नहीं होगा जहां जैन मन्दिर का निर्माण न हुआ हो। कितने जैन मन्दिर बने उनका आंकड़ा भी उपलब्ध नहीं है। उनमें भी अनेक उपेक्षा के कारण खण्डित अथवा नष्ट हो गये। नित नये–नये मन्दिर बनते रहने से अनेक प्राचीन मन्दिरों की ओर ध्यान ही नही गया। इस प्रकार सांस्कृतिक परम्परा, मन्दिर शिल्प, जन साधारण में आस्था की गहराई का ज्ञान होने में व्यधान उत्पन्न हुआ। इस प्रकार के अनेक अनछुए पक्ष को उजागर करने का उत्तरदायित्व श्री मोहनलाल जी बोल्या ने उठाया और इस काम में सहयोगी श्रीमान् हरकलाल जी पामेचा रहे। श्री बोल्या जी के अथक प्रयास का परिणाम उदयपुर के जैन मन्दिरों से यात्रा शुरू होकर देलवाड़ा होती हुई सम्पूर्ण मेवाड़ क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रही अपितु वागड़ व राजस्थान के अन्य क्षेत्रों का भी बोल्या जी ने सर्वेक्षण प्रारम्भ किया है।

नगर एवं गांवों तक फैले हुए जैन मन्दिरों की खोज एक दुरह कार्य था। वास्तव में अनेक विपरित परिस्थितियों के कारण मन्दिरों का सर्वेक्षण और उनसे जुड़े तमाम पक्षों का अध्ययन कम चुनौतीपूर्ण नहीं था। इस चुनौती को बोल्या सा. ने धैर्यता, गम्भीरता से सफलतापूर्वक सामना किया। इसके परिणामस्वरूप श्री बोल्या जी के कई ग्रन्थ प्रकाशित है

वागड़ के जैन श्वेताम्बर मन्दिर बोल्या जी और पामेचा जी की नवीनतम कृति है। इसमें क्षेत्र के 111 मन्दिरों के विवरण का समावेश है। इसकी अनुक्रमणिका भी अत्यधिक प्रभावी बन पड़ी है। वैसे भी बोल्याजी के ग्रन्थों का कलेवर व्यापक है। उन्होंने अपनी कृतियों केवल मन्दिरों का इतिहास ही नहीं दिया अपितु मन्दिर के कौने–कौने का महत्व दिग्दर्शित किया है। मन्दिर का निर्माणकाल तथा उसमें रखी हुई मूर्तियों का भी अध्ययन मौलिकता लिए हुए है। मूर्तियां पत्थर या किस धातु की बनी हुई है उनकी ऊँचाई कितनी है, मन्दिर के किन–किन स्थानों पर रखी हुई है, का भी सूक्ष्म अध्ययन उनके लेखन की विशेषता है।

मन्दिरों में उत्कीर्ण शिलालेख भी उनकी नजर से ओझल नही हुए हैं। मन्दिर की व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला गया है। अतः यह पूर्ण विश्वास से कहा जा सकता है उनका मन्दिर चित्रण पर्याप्त व्यापकता लिए हुए है। मन्दिर से सम्बन्धित सभी पक्षों का यथोचित विवरण से उनके ग्रन्थों का जनसाधारण हो या शोधार्थी सबके लिए महत्व बढ़ गया है। निश्चित रूप से बोल्या जी की कृतियां शोध के लिए अनेक नये आयाम उपलबध करायेगी। विषय का विशद् विवरण अपने ग्रन्थों में समावेश करने के लिए श्री बोल्या जी एवं पामेचा जी को साधुवाद। आशा है कि कला, शोध, आस्था जगत के सम्मुख शीघ्र ही उनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ उपलब्ध होंगे। ग्रन्थों की भाषा सहज व सरल एवं प्रभावी है। मन्दिरों के सुन्दर चित्रों से ग्रन्थ के महत्व में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

एक बार पुनः आपको इन सुन्दर तथा बहुआयामी कृति के लिए बधाई।

(कृष्णकान्त गुप्ता)

संपादक की कलम से

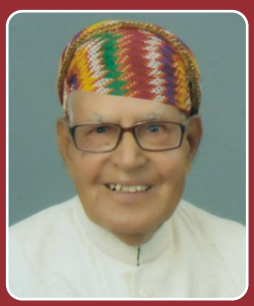

मैं पिछले 15 वर्षों से जैन श्वेताम्बर मंदिर व अन्य पुस्तकों का लेखन सम्पादन का कार्य कर रहा हूँ। मैंने देशवासी को मेवाड़, वागड़ प्रदेश के 550 श्वेताम्बर जैन मंदिरों की जानकारी दी गई। इन मंदिरों में स्थापित हजारों प्रतिमाओ को छुआ (Touch) किया। इस कार्य को करने में एक नवीन ऊर्जा प्राप्त होती रही और मैं अपने कार्य में अग्रसर होता रहा।

मेरा स्वास्थ्य खराब होने से कार्य की (लेखन कार्य) समाप्ति का विचार कर लिया। संयोगवश सिरोही जिले के एक सामाजिक कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला वहां एक प्राचीन मंदिर (मूंगथला) का भावपूर्वक दर्शन किए। जानकारी प्राप्त की, उस समय शरीर में एक हरकत हुई, जैसे एक प्रकाश की किरणे (ऊर्जा) मेरे शरीर में प्रवेश कर रही है। विचार आया कि सिरोही जिले के श्वेताम्बर मंदिरों की जानकारी जन साधारण तक पहुँचाए। इसी विचार से प्रेरित होकर सम्बन्धित सामग्री संकलित करने के कार्य में जुट गया। बाद में क्षेत्र के मंदिर से मंदिर जाकर दर्शन किए और पाया कि कई प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार हो गया है और हो रहा है। जीर्णोद्धार कार्य का अवलोकन किया, पाया कि प्रायः सभी मंदिरों की प्राचीनता उपलब्ध नहीं है।

प्राचीनता को परखने के लिए शिलालेखों, लेख, साहित्य, ताम्रपत्रों की आवश्यकता होती है, अनुभव यह हुआ कि प्राचीन शिलालेख नष्ट हो गए या प्राचीन लेखों पर मार्बल पत्थर लगाने से नष्ट हो गए। 13वीं शताब्दी में हुए युवाचार्य कलिकाल सरस्वती श्री हेमचन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. द्वारा रचित ''त्रिषाष्टि पुरूष शलाका चरित'' में श्री अजितनाथ भगवान का जीवन चरित्र का वर्णन करते हुए, चक्रवर्ती राजा सगर का वर्णन करते हुए, सागर के पुत्रों द्वारा अष्टापद तीर्थ की यात्रा करने का उल्लेख है कि प्राचीन तीर्थ को हटाया नहीं जाए वरन् उसके संरक्षण के बारे में सोचा जाए। इस तथ्य को मैंने मेरी सभी पुस्तकों में लिखा है व आचार्य/साधुसंतों को अनुरोध करता आया हूँ कि जीर्णोद्धार होना चाहिए लेकिन आमूल चूल परिवर्तन कर नूतनता नहीं लानी चाहिए, ऐसा उल्लेख किया । ऐसा करने से हमारे पूर्वाचार्य के प्रति असम्मान होगा और मंदिर की प्राचीनता नष्ट होगी । ऐसे मंदिर वर्तमान सदि का निर्मित माना जाएगा जिससे जैन/अजैन लोगों के मन में भी यह शंका होंगी कि जैन धर्म/संस्कृति अधिक प्राचीन नहीं है। इस पर विचार करना चाहिए। इस बिंदु पर मेरा व्यक्तिगत सुझाव है कि एक समन्वय समिति का निर्माण करना चाहिए और प्राचीन जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार कराने से पूर्व समन्वय समिति से सलाह

लेकर ही होना चाहिए। प्राचीन जैन मंदिर हमारे जैन धर्म, संस्कृति व अतीत का इतिहास जो हमे विरासत में मिले है जो मूल रूप से हमारी आस्था से जुड़ा हुआ है उनका जीर्णोद्धार करने के पूर्व यह सोचना होगा कि उसका पुरातत्व रूप से तकनीकी अपनाकर उनकी प्राचीनता एवं मूल स्वरूप को यथावत बनाए रखना प्रबन्धकारिणी एवं स्थानीय समाज का यह दायित्व है कि प्राचीन शिलालेख एवं पट्टे, ताम्रपत्र व प्रशस्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन या नष्ट होता है तो अपराधिक श्रेणी का संज्ञा में आता है। इसके लिए भारत सरकार/राज्य सरकार को भी प्रस्ताव करे और पुरातत्व व प्राचीनता कायम रखे। इसके लिए समन्वय समिति का सुझाव से कार्य हो।

विश्वस्त सुत्रों से ज्ञात हुआ है कि अखिल भारतीय तपागच्छीय साधु सम्मेलन दिनांक 26 व 27 मार्च को सम्पन्न हुआ उसमें यह निर्माण लिया है कि भविष्य में जो भी जीर्णोद्धार होगा या उस समय इस प्रकार से कार्य किये जाये जिससे प्राचीनता बनी रहे, संरक्षित की जाए ।

जब मंदिरों की जानकारी ली तो ज्ञात हुआ कि भगवान महावीर ने 36–37 वर्ष में छद्म अवस्था में इस क्षेत्र में विचरण किया। मूंगथलों से प्राप्त लेख,अनादरा की भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा, नांदिया, बामनवाड़ जी, दियाणा आदि स्थानों पर जीवित स्वामी की प्रतिमा का वर्णन आया है। जिनको भगवान महावीर के भ्राता नंदीवर्धन ने बनवाकर प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है। ऐसी पुण्यधरा के प्रतिष्ठित प्रतिमा का दर्शन करना अपने आप गौरव की बात है और मैं स्वयं अपने आप को धन्य मानता हूँ कि मैंने सिरोही जिले के मंदिरों का अध्ययन का विचार किया। भगवान तीर्थंकरों के आदेश/उपदेश के फलस्वरूप मैंने एक नई ऊर्जा प्राप्त की और यह पुस्तक आपके हाथों में देने का प्रयास किया।

इतिहास हमेशा अमर रहता है जिसका अस्तित्व विश्व में बना रहा और उसी के आधार पर व्यक्तिअतीत की अभिव्यक्ति प्राप्त कर सकता है और उसके माध्यम से या उसको आधार मान कर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। यह अभिव्यक्ति शब्दों से की जा सकती है जो अतीत का प्रमाणीकरण भी होता है और वर्तमान को देखा जा सकता है तथा भविष्य को संजोया भी जा सकता है। इन्हीं शब्दों के लेखन से प्राचीनता का प्रमाणीकरण सिद्ध होता है। जैन धर्म की मंदिर संस्कृति कितनी प्राचीन है उसकी कितनी प्रभाविकता, आकर्षित, चमत्कारिता है उसको संकलित लेख व अन्य वर्णन प्रत्येक मंदिर के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

(मोहनलाल बोल्या)

सह संपादक के विचार

मेवाड़–वागड़ की तरह सिरोही एवं गोडवाड (पाली) क्षेत्र का भी गौरवशाली इतिहास रहा है। यह धरती भी धर्मवीरों एवं शुरवीरों की पुण्य स्थली रही है। सिरोही एवं पाली जिले के जिनालय भी बहुत प्राचीन एवं ऐतिहासिक है ऐसा माना जाता है कि इस पुण्य स्थली पर भगवान महावीर का विचरण हुआ था एवं कई स्थलों पर इसका विवरण मिलता है। हिमाचल की तरह सिरोही एवं गोडवाड प्रांत को देव भूमि कहा जाता है। यहां पर सभी जाति एवं सम्प्रदायों के देवालय मिलते है। सिरोही नगर में एक साथ 14 मंदिरों की उपस्थिति अन्यत्र दुर्लभ है। यह महान तीर्थ शत्रुंजय तीर्थ का लघु रूप है। हिन्दुस्तान के किसी भी जिले में इतने जिनालय देवालय नहीं मिलेंगे। जितने अकेले सिरोही जिले में हैं। यहां के छोटे से छोटे गांव में भी आपको जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास के दिग्दर्शन कराने वाले जिनालय व देवालय मिल जावेंगे। हर मंदिर में सेवा–पूजा विधि विधान के अनुसार नियमित रूप से होती है, भले ही वहां निवास करने वाले जैन बंधुओं की संख्या न्यून हो। अधिकतर जैन बन्धु अपने व्यवसाय हेतु देश के विभिन्न शहरों में बस गये है। अपनी जन्मभूमि के प्रति अपने असीम प्रेम की वजह से समय समय पर यहां पर आते रहते हैं। आज इस क्षेत्र के करीबन 90% जिनालयों में जीर्णोद्धार एवं नवनिर्माण का कार्य चल रहा है, पुराने देवालयों की जगह नये देवालयों का निर्माण हो रहा है। अरबों रूपये लगाकर कार्य चलरहा है। प्राचीनता को सुरक्षित रखने का प्रयास भी किया जा रहा हैं, प्राचीन शिलालेख एवं अवशेषों को संरक्षण प्रदान किया जा रहा है। सबसे प्राचीन शिलालेख इस जिलें मे मिलते है। सिरोही जिले में विश्व विख्यात माउण्ट आबू देलवाड़ा के जिनालय अपनी अदभूत कलाकृति, शिल्पकला, स्थापत्य कला, मूर्तिकला के लिये पर्यटकों का मुख्य आकर्षक का केन्द्र है। आबू के देवालयों की शिल्प एवं वास्तुकला को निहारने हेतु विश्व भर के पर्यटक वर्ष भर आते रहते है। बसन्तगढ़ एवं चन्द्रावती नगरी में प्राचीन अवशेषों को जानने हेतु इतिहासकारों द्वारा खनन का कार्य किया जा रहा है। सिरोही जिले के प्राचीन तीर्थ स्थलों में प्रमुख है।

जिले के छोटे–छोटे गाँव में भी प्रसिद्ध देवालय एवं जिनालय हैं। ये सभी जिनालय अपने आप में अदभूत एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं। इस प्राचीन धरोहर को सुरक्षित रखना एवं संरक्षण देना हमारा पुनित कर्तव्य है। जहाँ जीर्णोद्धार आवश्यक है, वहां अवश्य किया जाये, लेकिन प्राचीनता को भी सुरक्षित रखा जाना आवश्यक है। यहाँ पर उपलब्ध कई प्रतिमाएँ सम्प्रति कालिन है, जो करीबन 2200 वर्ष पुरानी है।

नवीन निर्माण के बजाय प्राचीन मंदिरों को सुरक्षित रखना आवश्यक है। आज ऐसा महसुस होता है कि प्राचीन मंदिरों को जीर्ण–शीर्ण के नाम पर या मंदिरों में कईं दोष बताकर मंदिरों का आमूल–चूल परिवर्तन कर प्राचीन मंदिरों को जमीनदोज कर नूतन मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है। कई मंदिरों के शिलालेखों को नष्ट करना ऐतिहासिक धरोहरों के साथ खिलवाड़ है। कई राजा–महाराजा हुए, कई राज्य बने, नष्ट हुए, शहर बने, उजड़े लेकिन कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म, प्रतिमा, लेख, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि जीवित रहते है। इन्हीं के आधार पर प्राचीनता सिद्ध होती है। श्रीमान् बोल्या साहब ने इस पुस्तक में भी लेख, शिलालेख एवं प्राचीनता पर बल दिया है। इन मंदिरों का वास्तुशास्त्र, शिल्पकला, दर्शन, विज्ञान, चित्रकला आदि का वर्णन इतिहास से प्राप्त होता है।

भारतीय संस्कृति के चिर शाश्वत आधार साम्भ देवालयों, जिनालयों एवं मंदिरो के इतिहास लेखन एवं संकलन के पुनित कार्य में परम श्रद्धेय सुश्रावक ध्येय निष्ठ, समर्पित व्यक्तित्व के धनी, अनेक धार्मिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थों के

सृजनकर्मी, महासभा दर्शन पत्रिका के यशस्वी संपादक, चिन्तनशील, विचारक, समाजसेवी, जैन धर्म एवं संस्कृति के रक्षक, देवालयों एवं जिनालयों की प्राचीनता के पक्षधर, गुरू भगवंतों के प्रति निष्ठावान श्रावक, साहसी व्यक्तित्व के धनी, 80 वर्ष की आयु में भी देविय प्रेरणों से युवकों से भी अधिक कार्य करने वाले श्रीमान् मोहनलाल जी साहब बोल्या ने मुझे सुयोग्य समझकर मेवाड़ क्षेत्र के देलवाड़ा, प्रतापगढ़ एवं चित्तौड़गढ़ जिले, भीलवाड़ा जिला एवं रणकपुर, वागड़ प्रांत के डूँगरपुर, बांसवाड़ा जिले के सभी मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के देवीय कार्य में सहयोगी सम्पादक के रूप में चयनित किया, यह मेरा सौभाग्य है कि सिराही जिले एवं गोडवाड क्षेत्र के जिन मंदिरों के इतिहास लेखन एवं संकलन के कार्य में पुनः आपने अपने सहयोगी के रूप में चयन कर जो मुझे सम्मान दिया है इस हेतु हृदय के आसिम भावों से आपका आभार प्रकट कर अपने आपको गौरान्वित महसुस कर रहा हूँ।

मैं स्वयं इतिहास प्रेमी हूँ इसी इच्छा शक्ति की वजह से पिछले कुछ वर्षों से इतिहास लेखन के परम पुनित कार्य में स्वयं भारतीय इतिहास संकलन योजना चित्तौड़ प्रान्त के संगठन सचिव के नाते अधिकारिक रूप से पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा हूँ। जिन शासन के इस देवीय कार्य में सहयोग करना सौभाग्य का विषय है सिरोही प्रांत के इस पुनित चुनौती पूर्ण कार्य को करने में पारिवारिक सदस्यों के सहयोग की महती आवश्यकता रहती है। किसी भी सदस्य के विरोध की स्थिति में यह कार्य करना अत्यन्त कठिन हैं। इस कार्य हेतु सहयोग देने हेतु में आभार प्रदर्शित करता हूँ मेरी धर्म सहायिका श्रीमती प्रेम पामेचा, सुयोग्य सुपुत्र दिनेश एवं परमेश पुत्रवधुओं श्रीमती अर्चना, श्रीमी सीमा, सुपौत्र श्री शुभम मनन, सुपौत्रीया प्रियल (गुल्लु), आर्चि, हनि, पामेचा सुपुत्री श्रीमती पंकज पोखरना, दामाद श्री महेन्द्र जी पोखरना एवं दोहित्री श्री प्रांजल पोखरना। मैं अपना कार्य समर्पित करता हूँ अपने प्रिय सुपौत्र स्व. श्री रिषभ पामेचा का जिसकी मंद मुस्कान आज भी मेरी प्रेरणा का स्त्रोत है। यद्यपि उसे इस नश्वर संसार से विदा हुए 6 वर्ष बीत चुके हैं।

जैन मंदिरों के सुरम्य वातावरण में स्थापत्य तक्षणकला के अद्वितीय, अनुपम, अतुलनीय, मनमोहक, चिन्ताकर्षक, रम्य सुदर्शन वास्तु का चित्रांकन करने में हमारे प्रिय फोटोग्राफर श्री महेश जी दवे (मोली आर्ट स्टुडियो देलवाड़ा जिला राजसमन्द) के योगदान की सराहना करना भी अपना धर्म समझता हुँ। पत्रकार श्री महेश जी दवे की अमूल्य सेवाएँ भी सदैव स्मरण रहेगी। ये अत्यन्त व्यस्त होने के बावजुद भी देवीय कार्य में आंशिक सहयोग दिया। बहुत–बहुत आभार

श्रीमान् बोल्या साहब की यह हार्दिक तमन्ना थी कि पूर्व की भांति इस बार भी इस जटिल कार्य में अपना सहयोग करना। यद्यपि हम दोनों हार्टपेशियन्ट हैं। उम्र भी अधिक हो चुकी है। पता नहीं किस देवीय शक्ति से हम यह कार्य कर सके। यद्यपि सिरोही जिला बहुत छोटा है पाली जिले का गोडवाड प्रांत भी ज्यादा बड़ा नहीं है। लेकिन करिबन 400 जैन मंदिरों में जाना, इतिहास का संकलन करना, फोटोग्राफी करना बहुत ही कठिन कार्य था। कई जगहों पर हमे बहुत ही अच्छा सहयोग स्थनीय धर्म प्रेमी बंधुओं का मिला, परन्तु कुछ बड़े–बड़े क्षेत्रों में फाटोग्राफी हेतु बिल्कुल मना कर दिया गया। बड़ी कठिनाई से पहुँचना, सहयोग की जगह असहयोग बड़ा विचित्र लगा। इन जिलों में कार्य करने एवं देव दर्शन करने में दिल को असिम शान्ति का अनुभव हुआ। सिरोही जिले के जैन मंदिरों एवं इतिहास पर पूर्व में भी कई बन्धुओं ने बहुत कुछ लिखा है।

हमारा प्रयास सिरोही एवं गोडवाड के सभी मंदिरों के इतिहास का संकलन करना, यह सब कार्य पूज्य गुरू भगवंतों एवं धर्म प्रेमी बंधुओं के सहयोग से ही संभव हो पाया है। सहयोग करने वाले सभी बंधुओं का आभार पुस्तक कैसी बनी, इस हेतु आपके सुझाव आमंत्रित है, ताकि भविष्य में आवश्यक संशोधन किया जा सके। मैं भी पिछले 12 वर्षों से इस देवीय कार्य में श्रीमान् बोल्या साहब के साथ सेवारत हूँ।

मानव की पहचान उसकी संस्कृति से और संस्कृति की पहचान उसके इतिहास, साहित्य, कला, धर्म, शिलालेख, ताम्रपत्र से। यदि हमें अपनी पहचान सुरक्षित रखनी है तो हमें हमारे इतिहास का संरक्षण करना होगा। सभी बन्धुओं का एक बार पुनः हार्दिक आभार एवं धन्यवाद।

(हरकलाल पामेचा)
निवासी देलवाड़ा (मेवाड़)
जिला राजसमन्द (राज.)

सह-संपादक का परिचय

नाम	:	हरकलाल पामेचा
माता	:	स्व. श्रीमती भूरीबाई पामेचा
पिता	:	स्व. श्री कन्हैया लाल जी पामेचा
जन्म दिनांक	:	27.08.1945
जन्म स्थल	:	देलवाड़ा (मेवाड़) जिला राजसमन्द (राज.)
शिक्षा	:	एम.ए. (अंग्रेजी, अर्थशास्त्र) बी.एस.सी. एम.एड.
व्यवसाय	:	राज्य सेवा से सेवानिवृत प्राध्यापक (अंग्रेजी)
धर्म सम्प्रदाय	:	जैन धर्म – स्थानक वासी
धर्मपत्नि	:	श्रीमती प्रेम पामेचा (गृहिणी)
प्रकाशन कार्य	:	इतिहास के पत्र वाचन 6 प्रकाशित, आकाशवाणी वार्ता (1987) मूक साक्षी इतिहास के देलवाड़ा के जैन मंदिर, अपनी पत्रिका में 3 आलेख प्रकाशित
संस्थागत कार्य	:	अध्यक्ष शिक्षा समिति, नागरिक विकास मंच, देलवाड़ा सदस्य सम्पादक मंडल : ''अपनी पत्रिका'' 1. हेरिटेज पुस्तक का हिन्दी अनुवाद एवं संशोधन, हेरिटेज कैलेण्डरों का प्रकाशन 2. मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–3 वागड़ प्रांत के जैन श्वैताम्बर मंदिर – सह सम्पादक 3. इतिहास संकलन कार्य (चित्तौड़ प्रांत) 4. पत्रिकाओं में आलेख एवं प्रकाशित (जैन मंदिर, देलवाड़ा, नागदा, संस्कृति) राजस्थान पत्रिका, हलकारा, मुम्बई, सिद्धार्थ फाउण्डेशन सूरत, खबर सम्राट, उदयपुर एवं प्रेस आदि। 5. पत्र–वाचन राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संगोष्टी–10 6. महाविद्यालय एवं विद्यालयों में प्रवचन 7. देवकुलपाटक – देलवाड़ा के देवालयों का इतिहास संकलन
सम्पादक	:	''झाला वंश वारिधी''
केन्द्राधीक्षक	:	15 वर्ष धार्मिक परीक्षा बोर्ड, जोधपुर जेलर परीक्षा, जोधपुर धार्मिक पाठशालाओं में मार्गदर्शन

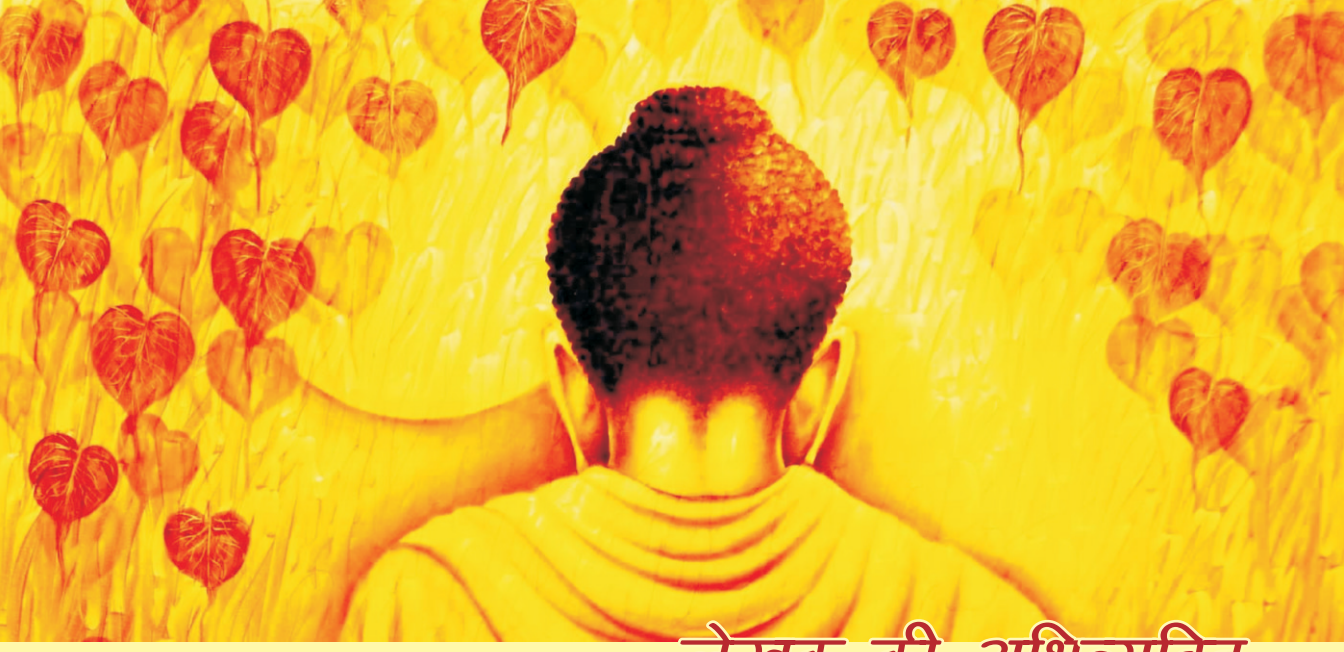

लेखक की अभिव्यक्ति

मानव जाति बहुत ही दुर्लभ है उसमें भी जैन धर्म में उत्पन्न होना। अनंत पुण्योदय के प्रभाव से मानव जन्म प्राप्त होता है। पूर्व भवों के पुण्योदय के फल से मनुष्य को तीर्थंकर का दर्शन, तीर्थ यात्रा व पूजा का लाभ मिलता है।

तीर्थ कौन सा कहलाता है अरिहंत भगवान ने जो भूमि पवित्र की है वह तीर्थ है। ऐसी ही भूमि सिरोही जिलें की है जहां तीर्थंकर महावीर ने अपने 37 वें वर्ष में छद्म अवस्था में इस क्षेत्र में अनेक स्थानों पर विचरण किया जहां उनकी कई महात्माओं ने कहा कि आत्मा के तारे वह तीर्थ है उन्होंने प्राचीन तीर्थ के बारे में वर्णन किया है :–

ख्यातो अष्टापद पर्वतो गजपद सम्मेत शैलाभिधः, श्रीरैवतकः प्रसिद्ध महिमा
शत्रुंजयो मण्डपः

वैमारः कनकाचलो बुंद गिरिः श्रीचित्रकुटदयः स्तवं श्री ऋषभोदेया जिनवराः कुर्वन्त वोमंगलम्

यद्यपि सभी तीर्थंकर की अलग–अलग स्थानों पर जन्मस्थली है लेकिन तप, साधना, एकांत में ही होती है। ऐसा ही उदाहरण तीर्थंकर महावीर का है जिसका वर्णन किया जा रहा है। भगवान महावीर की साधना की भूमि भी एकांत में है।

तीर्थ दर्शन की महिमा बहुत अधिक बताई गई है। महात्माओं ने वर्णन करते हुए बताया है कि :–

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनम् पापनाशनम्।
दर्शनम् स्वर्ग सौपानम्, दर्शनम् मुक्ति साधनम्।।

अर्थात् देव (अरिहंत) के दर्शन से पाप नष्ट होते है और दर्शन से स्वर्ग प्राप्त होकर मुक्ति अर्थात् मोक्ष प्राप्त हो जाता है। दर्शन मात्र से ही मुक्ति प्राप्त होती है।

इसी उद्देश्य को लेकर लेखक ने मेवाड़ के (उदयपुर नगर, उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा जिले के समस्त तीर्थ (मंदिर) व वागड़ प्रदेश (डूंगरपुर, बांसवाड़ा जिले के समस्त मंदिर) के दर्शन किये व अब सिरोही जिलें के सभी मंदिरों के दर्शन करने का सौभाग्य मिला ऐसी पुण्य धरा जहां तीर्थंकर प्रभु की चरण है

अतः सभी मंदिरों के दर्शन कर गौरवान्वित हो रहा हूँ। इसके साथ पाली जिले के भी कुछ प्राचीन तीर्थों का वर्णन किया जा रहा है।

सम्पूर्ण सिरोही जिला अपनी संस्कृति, वास्तुकला, चित्रकला व शौर्य का गौरवशाली इतिहास रहा। जिसमें आबू पर्वत पर स्थापित आबू के जैन मंदिर व प्रतिमा है जहां की वास्तुकला सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

हिन्दू देव–देवी की पूजा–पाठ प्रतिष्ठा आदि के लिए भी प्रसिद्ध रहा है। जिसका एक मात्र खण्डहर बसंतगढ़, चन्द्रावती नगरी, लाखावती नगरी, पद्मावती नगरी थी जो किसी समय में कला की दृष्टि से भी विकसित थी इसके अतिरिक्त वीरवाड़ा, दत्ताणी आदि स्थान प्रसिद्ध रहे। जहाँ महारावों की शौर्यगाथा महत्वपूर्ण रही। मुगलकालीन आक्रमण में कई प्रतिमाएं, किला, नगरी नष्ट हो गई, इसलिए संस्कृति का ह्रास हुआ, कई प्रसिद्ध किले नष्ट हो गए। मध्य पाषाणी युग की कला का संग्रह चंद्रावती नगरी में दिखाई देते है वहां पर पुरातत्ववेता ने खोज की है कि मानव द्वारा पत्थरों पर नक्काशी का कार्य होता था।

ऐसी कहावत है कि ''पूछते–पूछते गंगा तक जाया जा सकता है लेकिन विचार शुद्ध हो।''

प.पू. उपा. श्री जिनविजय जी म.सा. ने स्पष्ट लिखा है कि कुमत रूपी अंधकार से जिनकी आँखे बंद है उसे मार्ग पुछा नहीं जाता। मार्ग अनजान हो सकता है फिर भी चलेगा पथिक ही चाहे वह अनजान व अज्ञानी हो। पर पथदर्शक पूर्ण रूप से परिचित होना चाहिए। उनसे पूछा जा सकता है। प्रयास मेरा था, पथ–प्रदर्शक परिचित होना चाहिए। मेरे पथ प्रदर्शक के रूप में आचार्य श्री हेमचद्रसूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री कल्याणबोधिसूरीश्वरजी म.सा., पं. श्री अपराजित विजयजी म.सा., आचार्य भगवंत श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी व श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. आदि के दर्शन हुए सही मार्ग दिखाकर मुझे मंजिल तक पहुँचाया, मंजिल तक पहुंचाने के साथ–साथ आप श्री ने मानव जीवन के सफल जीवन के लिए, पाप से छूटने, धर्म से जुड़ने के लिए, आत्म प्रगति की साधना के लिए व अज्ञानता को समझाने व छोड़ने के लिए हमेशा ज्ञान रूपी गंगा को मेरी ओर मोड़ा, इसके साथ–साथ अन्य गुरूओं ने भी मेरा मार्ग प्रशस्त कर मुझे सम्बल दिया उन सभी को नतमस्तक होकर भावपूर्वक वंदना ।

पुनः यही बार–बार अनुरोध है कि गुरूदेव, मुझ में हजारों कमी है, मुझे कोई धर्म की जानकारी नहीं है। मेरी सभी कमी को इस तरह से परिवर्तन कर दी गुरूदेव ने, जैसे एक खारे समुद्र को आपने अपने अमृत रस से उसको मीठी झील बना दी कोटि–कोटि वंदन ।

इस ग्रंथ को तैयार करने के लिए निम्नों सदस्यों से सहयोग प्राप्त हुआ जिनके लिए हृदय से आभारी है :

1. श्रीमती सुशीला बोल्या पत्नी मोहनलाल बोल्या (लेखक)
2. श्रीमती नीरू पत्नी श्री राजेन्द्र लोढ़ा (पुत्री–पुत्री दामाद)
3. श्रीमती निशी पत्नी श्री अशोक खमेसरा (पुत्री–पुत्री दामाद)
4. श्री सौभाग्यचंद्र कल्याण जी पेढ़ी, पिण्डवाड़ा
5. श्री सोहनलाल जी सुराणा नि. सेवाड़ी (पाली) हाल ठाणा
6. श्री चंद जी सिंघवी, पाल लिंक रोड़, जोधपुर
7. श्री हरकलाल जी पामेचा, नि. देलवाड़ा (राजसमंद) क्षेत्र में साथ रहकर संकलन में सहयोग प्रदान किया । (सुकृत सहयोग)
8. श्री महेश दवे नि. देलवाड़ा (राजसमंद) क्षेत्र में साथ रहकर फोटोग्राफी में आंशिक सहयोग प्रदान किया (सुकृत सहयोग)
9. श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर

10. श्री जय जिनेन्द्र सेवा संघ, पूना (महाराष्ट्र), अध्यक्ष श्री विमलचंदजी मूथा

11. श्री दलपतसिंह पुत्र श्री नन्दलाल दोशी, उदयपुर लेख सुधार में सहयोग (सुकृत सहयोग)

12. स्व. श्रीमती कमलादेवी पत्नी स्व. हिम्मतसिंहजी बोल्या की स्मृति में श्रीमती चन्द्रा पत्नी श्री दलपतसिंहजी बोल्या

13. अम्बावाडी जैन संघ अहमदाबाद की बहनों द्वारा सहयोग

14. गांधीनगर जैन संघ अहमदाबाद की बहनों द्वारा सहयोग

15. श्री रांदेर रोड़ जैन संघ सूरत द्वारा सहयोग

16. श्री दिलीप जी चोरड़िया, उदयपुर

उन सभी सदस्यों को जिनका प्रत्यक्ष / अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ– हार्दिक आभार।

प्राचीनकाल से मानव अपनी सुख शांति की खोज करता आ रहा है लेकिन भौतिक सुख–सुविधा के कारण आत्मिक शांति प्राप्त नहीं हुइ। इसकी खोज के लिए शुद्ध वातावरण में शांत व एकांत व पवित्र स्थलों को खोजा और उन स्थानों को खोज निकाला वह जैन समाज के लिए मंदिर है। अन्यों के लिए मस्जिद, गिरिजाघर, गुरूदेव व वैदिक धर्म अनुयायियों के लिए मंदिर है।

मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमाऐं उन महान आत्माओं (तीर्थंकर) की है जिन्होंने जीवन में सर्वोच्च पद को प्राप्त कर लिया है उनके दर्शन से ही हमारे समर्पित भावों की अभिव्यक्ति है। ये प्रतिमाएं किसी व्यक्ति विशेष की नहीं उनके आदर्शों की है।

जैन मंदिरों में प्रतिष्ठित प्रतिमा को खड़ी कार्योत्सर्ग या पद्मासन में विराजित होती है। इसका अभ्रिपाय है उन्होंने काम, क्रोध, अहंकार, मोह, माया से विरक्त हो गए है और राग–द्वेष से मुक्त हो गए अतः घाती कर्मों का क्षय कर सर्वोच्च पद प्राप्त कर लिया। उनके दर्शन, पूजन करे और उसी अवस्था में ध्यानस्थ समाधिस्थ कर अपने आप में आनन्दित होते है और मानव अपने शरीर को मंदिर और आत्मा–परमात्मा हो जाती है।

इन्हीं भावों से .....

जब मैंने मूरत देखी प्रभु की तब ही पुण्य दशा, मैत्री जागी, जन्म–जन्म के दुरित गए सब कुमति कुटिलता दुर्मति भागी। वस्तु – दृश्य के देखने मात्र से चिकार उत्पन्न होते है यथा हाव भाव से नृत्य करने वाली नृत्यकी को देखने से मन में विकार–भाव उत्पन्न होते है। उसी प्रकार प्रभु की शांत, गंभीर व वीतराग भाव युक्त प्रतिमा को देख वीतराग भाव उत्पन्न होता है। इसके लिए ज्ञान का प्रसार करना ही मेरा एकमात्र उद्देश्य है।

संकलन करना एक कला है और इस कला के माध्यम से विभिन्न विद्वानों के विचार जो विभिन्न पुस्तकों, विभिन्न स्थानों पर सुरक्षित है। जिनको खोजना भी कठिन कार्य है जो यथा संभव खोज कर विभिन्न स्थानों से एकत्रित कर पुस्तक में अपनी भाषा में समावेश किए है जो शोधार्थी के लिए उपयुक्त रहेगी और इस शोध को आगे बढऋाने से सहयोगी होंगे व यह पुस्तक उनके लिए मार्गदर्शक बनेगी इसके साथ नवीन सामग्री व अछूते आयामों को भी समावेश किया है वे भी समाज के लिए उपयोगी रहेगी, ऐसी मान्यता है।

पुनः जिले की सभी जैन–अजैन संस्थाओं, व्यक्तियों ने इस कार्य में सहयोग प्रदान किया, उनका आभार

(मोहनलाल बोल्या)

लेखक - परिचय

- नाम – मोहनलाल बोल्या
- माता – स्व. श्रीमती गुलाबकुंवर बोल्या
- पिता – स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या
- जन्म स्थल – उदयपुर
- जन्म दिनांक – 15 जून, 1936
- शिक्षा – बी.कॉम, एम.ए. (समाज शास्त्र)
- पत्नी – स्व. श्रीमती बसंत बोल्या एवं श्रीमती सुशीला बोल्या
- धर्म – जैन धर्म, मूर्ति पूजक समाज
- व्यवसाय – सेवानिवृत
  जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची

- उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
- मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ-देलवाड़ा के जैन मंदिर
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ- केशरिया जी
- नवकार मंत्र स्मारिका
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग - 1
- नमोकार मंत्र - महामंत्र (मौन साधना, मंत्र)
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग - 2
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग - 3
- वागड़ के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- सिरोही एवं पाली जिले के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- महासभा दर्शन (मासिक पत्रिका)
  जनवरी, 11 से जनवरी, 2016 तक
- संस्थागत कार्य
  कार्यकारिणी सदस्य :
  श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर व संयोजक - ज्ञान खाता
  श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

सिरोही का इतिहास

सिरोही राजस्थान (राजपुताना) के दक्षिण–पश्चिम में 24.20 और 25.10 उत्तर अक्षांश तथा 72.16 और 73.10 पूर्व रेखांश के बीच में स्थित हैं। यह राज्य सिरणवा नामक पहाड़ी के नीचे बसा हुआ हैं। जिसकी राजधानी सिरोही है। इसको महाराव सेंसमल ने वि.सं. 1482 में बसाया था। इनका राजमहल भी ऊँचे पहाड़ी पर बना हुआ हैं, इस राजमहल के नीचे ही थोड़ी दूरी पर जैन मंदिरों का समूह एक ही लाइन में स्थापित है। इस लाइन को या मार्ग को 'देरासर की गली' कहा जाता हैं। जैन मंदिरों के अतिरिक्त वैदिक धर्म के भी अनेक मंदिर स्थापित है। यह प्रदेश का छोटा सा राज्य है जिसमें अनेक जैन मंदिर है जिसके कारण इसको लघु शत्रुंजय कहा जाता है। दूसरा नाम देव नगरी है।

सिरोही राज्य पर शासन मौर्यवंश से प्रारंभ हुआ। मौर्य राज्य की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि नंदवंश के राजा महानंद की मुरा नाम की शुद्र (नाई) जाति की राणी से चन्द्रगुप्त उत्पन्न हुए और अपनी माता के नाम से मौरी (मौर्य) कहलाया। ई.सं. पूर्व 321 के लगभग चन्द्रगुप्त ने नंदवंश को नष्ट कर हिमालय से विन्ध्याचल क्षेत्र तक देश पर राज्य करने लगा, इसकी राजधानी पटना रही तथा इस राज्य का महानायक चाणक्य ब्राह्मण था। चाणक्य के सहयोग से पाटलीपुत्र (पटना) का राज्य प्राप्त कर पंजाब आदि से युननियों को निकाल कर उन सभी देशों को अपने अधिकार में लिया। बादशाह सिकन्दर की मृत्यु के बाद ई.सन् पूर्व 305 के लगभग सिरिआ का युनानी बादशाह सेल्यूकस निकेटार भारत की सीमा पर आक्रमण के लिए आया तब उसने सोचा कि चन्द्रगुप्त को हराना संभव नहीं है तो उसने सिन्धु के उत्तर का हिन्दुकश पर्वत का सारा भाग चन्द्रगुप्त को दे दिया तथा अपनी बेटी का विवाह उसके साथ (चन्द्रगुप्त) कर दिया। चन्द्रगुप्त के देहान्त के बाद उसका बेटा बिन्दुसार शासक बना। इसके बाद क्षत्रप व महाक्षत्रप का शासन रहा।

इसके बाद चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा बने। लेखों से ज्ञात होता है कि गुप्तवंशीय राजा का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ा। गुप्त वंश का शासन करीब 600 वर्ष तक चला जिसके फलस्वरूप गुप्तवंश प्रसिद्ध हुआ। इस वंश का घटोत्कच हुआ। इसके वंशोवंश उतार चढ़ाव होते हुए हुडवंश, बैसवंश, चावड़ावंश, गुहिलवंश, पड़िहारवंश, सोलंकीवश, परमारवंश व चौहानवंश का शासन रहा।

चौहान वंश इस समय परमारों की तरह अपने को अग्निवंशी कहते है और अपने मूल पुरूष चाहमान या चौहान जो ऋषि व शिष्य द्वारा आबू पर्वत पर अग्निकुण्ड से उत्पन्न होना मानते। वि.सं. 1600 के पूर्व के चौहान राजा अपने साथ कई शिलालेख लाए है। जिनमें अग्निवंश का कोई उल्लेख नहीं आता और वि.सं. 1300 में एक शिलालेख आबू व अचलेश्वर के मंदिर के एक स्तम्भ पर देवड़ा का राज्य स्थापित था जिसका नाम रावलूम्भा था। महाराव लूम्भा के महाराव उदय सिंह हुए बाद में मानसिंह सुरताण से सर केसरसिंह और अंतिम रूप से वर्तमान में श्री चौहानवंशीय है। चंद्रावती नगरी पर निरन्तर मुगलकालीन आक्रमण से रावलुम्मा ने वि.सं. 1462 में खोबा को (सिरोही का प्राचीन नाम) अपनी राजधानी बनाई और वहां की जनता अलग–अलग नगरों में जा बसी अधिकतर बालदा में बसी। प्रारम्भिक अवस्था में बालदा ही राजधानी मानी गई बाद में खोबा उपयुक्त नहीं होने से उसके पुत्र सहसमाल ने वर्तमान सिरोही को राजधानी बनाई।

जैन धर्म व प्राचीनता तथा मूर्तिपूजा की प्रचलन/प्राचीनता का वर्णन पिछली पुस्तक में किया है। अब सिरोही जिलें के जैन श्वेताम्बर मंदिरों का इतिहास व प्राचीनता का वर्णन किया जा रहा है। मेरा कार्य अध्ययन क्षेत्र जैन श्वेताम्बर मंदिर होने से मंदिरों का इतिहास के साथ समुचित महारावों का वर्णन भी किया जा रहा है।

सिरोही जिले का नक्शा

SIROHI DISTRICT
Bithura
Manadar
Jharoli
Jogapura
Shivganj
Kailash Nagar & Las
Joyla
Taleta
Posaliyan
Jetpura
Arathwara
Satapura
Sagaliya
Manora
Bhutgoon
Bagseen
Uthmau
Varara
Jamotra
Gol
Andor
Pairi
Chuli
Barloot
Jawal
Chotila
Bawal
Gurha
Ud
Kolar
Mohabbatnagar
Padeev
Dewa ka Bera
Kalandri
Goyali
Phugni
Caurial
SIROHI
Tawari
Vardara
Dadawa
Rampura
Naya Sanwara
Keshavganj
Jaila
Werapura
Sivera
Falwadi
Dhanta
Birwar
Mandwara
Balda
Sildar
Belangari
Nandiya
Sanpur
Mirpur
Janapur
Pindwara
Krishanganj
Lotana
Ajari
S I R O H
Kojra
Himmatpura
Sanwara
Mandawara
Basantgarh
Jamalpura
Lalpura
Dantrai
Nagani
Peshua
Raipur
Dhann
Pamera
Sirori
Nitaura
Dungri Rampura
Moras
Rohua
Gulabganj
Dadaria
Dhanari
Amarapura
Malava
Waloriya
Warka
Guru Shikhar
Panch Deval
Bhawari
Kodra
Pithapura
Revdar
Hathal
Sarupganj
Khan
Anadra
Kachholi
Wasa
Barman
Dabani
Mount Abu Sanctuary
Sagwara
Sanwara
Bant
Mount Abu
Rohira
Sorda
Magriwada
Karaunti
Nawavas
Jamta
Dhavli
Bhimana
Mandar
Vas
Bharja
Chandela
Amthala
Bhoola
Bhatana
Datani
Wara
Kiwarli
Deldar
Tonkiya
Girwar
Mungthala
Or
Derna
Dhibri
Chanar
Dotara
Abu Road
Santpur
Methipura
Chandravati
Nichlagarh
Mawal
Siyawa
Deri
Surpagla

णमोकार मंत्र ही मोक्षमार्ग...

प्रत्येक धर्म में अपना एक मंत्र अवश्य होता है। जैन धर्म में णमोकार मंत्र है जो महामंत्र है । णमोकार मंत्र के समान ही कुछ 5–7 ही मंत्र है। इस मंत्र में कोई व्यक्तिवादिता नहीं हैं, केवल गुणों के आधार पर ही मंत्र प्रतिपादित हुआ है। इस मंत्र में नमन का महत्व है। नमन का अर्थ झुकना है। णमोकार मंत्र को समझने के पूर्व कुछ तथ्यात्मक उदाहरण से समझना होगा।

णमोकार मंत्र का हजारो वर्षों से प्रचलन में हैं और इसके माध्यम से हम शिखर के ऊपरी सतह तक पहुँचेगें – पगडण्डी छिप जाएगी, मार्ग दिखाई नहीं देगा, मंजिल भी दिखाई नहीं देगी । शिखर, मंजिल तक पहुंचने के लिए कुछ मार्ग है। मार्ग तय करने के लिए कुछ उदाहरण को समझना होगा।

सन् 1936 में तिब्बत व चीन के बीच एक पर्वत गुफा में 716 गोल पत्थर उपलब्ध हुए जो भगवान महावीर के निर्वाण के पूर्व के 12500 हजार वर्ष प्राचीन है जिनके बीच छोटे–छोटे छिद्र खुदे हुए है। छिद्र किसके है ? क्या है ? इसका रहस्य नहीं खुला है। रूस के वैज्ञानिक सरजियो ने यह प्रयोग किया कि उन पत्थरों में विद्युत की किरणें प्रवाह की तो विद्युत विकिर्ण हुई और यह सिद्ध किया वे ग्रामोफोन रिकॉर्ड है। उस समय ऐसी व्यवस्था रहीं होगी। साथ में यह निश्चय हुआ कि ध्वनि आकाश में संचित होती है। उसके आधार पर समय आने पर यह रहस्य भी अवश्य खुलेगा क्योंकि कालचक्र एक चक्र है जो घूमता है।

दूसरा उदाहरण है – जापान की एक पहाड़ी पर एक समूह में मूर्तियां प्राप्त हुई जो दोबु कहलाती है और जो 25000 वर्ष प्राचीन है। इनका रहस्य अब खुला है जब अमरीकी वैज्ञानिक अंतरिक्ष पर गए तो उन्होंने अपने शरीर पर जिस प्रकार की वेशभूषा धारण की, उसी प्रकार की वेषभूषा इन मूर्तियों पर है इससे स्पष्ट हो गया कि उस समय (25000 वर्ष पूर्व) मनुष्य अंतरिक्ष तक आता जाता रहा होगा।

मनुष्य ज्ञानी होता है, जान लेता है, समझ जाता है, लेकिन भूल जाता है।

भगवान महावीर : जैन धर्म की बहुत बड़ी संस्कृति के अंतिम व्यक्ति हैं। वर्तमान में सभ्यता, संस्कृति बिखर गई, वह वातावरण नही रहा। प्राचीन याददाश्त रह जाएगी, वह याददाश्त परिवार के पूर्वजों द्वारा घर–घर में कही जाती रही है लेकिन आज उन पर हँसते हैं। आज हमारे जैन धर्म की सभ्यता, संस्कृति को ही काल्पनिक कही जाने लगी। हमारे अंतिम तीर्थंकर महावीर के अलावा सभी 23 तीर्थंकर की ऊँचाई क्रमशः अधिक रही और प्रथम तीर्थंकर की ऊँचाई 84 धनुष्य हाथ थी। यह क्यों ?

पृथ्वी सिकुड़ती गई, गुरुत्वाकर्षण (Gravitation) से पृथ्वी भारी होती गई। 10 लाख वर्ष पूर्व छिपकली भी हाथी जितनी बड़ी होती थी। गत दो वर्षों में बिच्छु का डंक, डायनासोर के जिवाश्म मिले है जो काफी लम्बे थे जो करोड़ों वर्ष प्राचीन बताए गए। इसका कारण गुरूत्वाकर्षण शक्ति ही है।

यदि मनुष्य चाँद पर रहने लगे तो उसकी ऊँचाई अधिक होगी क्योंकि वहां गुरुत्वाकर्षण (दबाव) कम होता है। अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री स्कॉट केली जो अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पर लगभग एक वर्ष (340 दिन) रहे। पुनः पृथ्वी पर लौटने पर 2'' लम्बाई बढ़ गई क्योंकि वहां पर गुरुत्वाकर्षण का दबाव नहीं था। जरा सोचिए जब पूर्व में मानव वहीं रहता था, गुरुत्वाकर्षण से बाहर था तो उनकी लम्बाई अधिक रही । अब कोई सन्देह नहीं रहा होगा।

णमोकार मंत्र महामंत्र है, एक सर्वोच्च शिखर है अर्थात् महाशिखर है पर चढ़ने का मार्ग लुप्त हो गया, छिप गया या दिखाई नहीं दे रहा है। शिखर के ऊपरी भाग तक पहुँचने के लिए **णमोकार मंत्र का जाप एक प्रक्रिया है।** यह सारी व्यवस्था है। हम क्या करते है ? क्या फलित हो सकता है ? आदि आदि।

जैसा कि हमने ऊपर वर्णन किया है कि पत्थर के छिद्र में से विद्युत तरंगे विकीर्ण हुई। आज ध्वनि विज्ञान है। ध्वनि कभी नष्ट नहीं होती। आकाश भी रिकॉर्ड करता है और संरक्षित करता है एक समय आएगा तब इसका रहस्य भी खुल जाएगा ।

प्रकृति का नियम है कि पृथ्वी एक चक्र है जो घुमती है। **समाजशास्त्री पेरोटो** ने सिद्ध किया कि पृथ्वी पर जो प्राणी नीचे सतह पर है वह ऊपर आऐगा और जो टॉप पर है वह नीचे आएगा। जैन धर्म में कालचक्र को दो भागों में बांटा है। 6 आरे उत्सर्पिणीकाल में 6 आरे अवसर्पिणीकाल में और यह चक्र घुमता रहता है जैसे आपने सुना होगा, पढ़ा होगा कि एक समय में (लिलिपुट की कहानी) (Story of Liliput) जिसमें मनुष्य की ऊँचाई 18'' थी और जैन शास्त्रों में भी यह इंगित है कि छठे आरे में मनुष्य की ऊँचाई 18'' होगी अर्थात समय परिवर्तन है या भ्रमणशील है अर्थात बाद में पुनः मनुष्य की ऊँचाई अधिक होगी।

रूस में 20 वर्षों में कई आश्चर्यचकित, भावनात्मक, आध्यात्मिक अध्ययन किए है। वैज्ञानिक, कामनिनओ ने सिद्ध किया कि एक व्यक्ति के सिर पर पानी से भरी मटकी दी गई। वह व्यक्ति समभाव, श्रद्धा से आँख बंद कर मंत्र का ध्यान किया तो कुछ समय बाद उस पानी में गुणात्मक परिवर्तन हुआ है और वह पानी पेड़–पौधों में डाला गया, छिड़का गया तो वे शीघ्र अंकुरित हुए, फल–फूल स्वस्थ हुए जबकि इसके विपरीत क्रोध वाले, झगड़ालू व्यक्ति को पानी की मटकी देकर प्रतिफल देखा तो वे पेड़–पौधो अंकुरित ही नहीं हुए या रूग्ण हुए। यद्यपि पानी में रासायनिक परिवर्तन नहीं हुआ है फिर भी गुणात्मक रूप से परिवर्तन आया है। इसमें मनुष्य के स्वभाव व भाव के आधार पर व उसका आभामण्डल के आधार पर परिवर्तन आता है। जहाँ मनुष्य रहते है वहाँ प्रकाश है तो वहीं अंधेरा है, उदय है वहाँ अस्त है। सुबह है वहां सायं भी, ज्ञानी है वहाँ अज्ञानी भी है।

लिखने का तात्पर्य यह है कि जहां अज्ञान है वहां ज्ञान भी है। ज्ञान प्राप्त होता है । णमोकार मंत्र (नमोकार मंत्र) नमन का है जो पांचों को नमन करता है यह मंत्र–महामंत्र है। यही मंत्र का आधार है मंदिरों व मकानों में मूर्ति के आगे झुकते हैं वहां चरण है या नहीं, यह महत्व नहीं। महत्व है हमको झुकने की व्यवस्था दी है, जो झुकता है, नमन करता है उसका क्रोध, मोह, माया, अहंकार आदि के भावों में कभी आती है। यह सब हमारी भावना से जुड़ी हुई है।

नमन से स्वतः नम्रता आ जाती हैं, नमन करते हैं तो हम निमंत्रण देते हैं, हमने श्रद्धा प्रगट की है, अपना मन खुल जाएगा नमन के साथ हमको समझ आजाएगी।

रूसी महिला वैज्ञानिक निनान माइखलोवा ने एक क्रांति की है कि ध्यान, तप में शक्ति होती है वह किसी भी वस्तु को अपनी ओर खींच सकती है, दूर कर सकती है, घड़ी की सूइयों को तेज गति से चला सकती है, बंद कर सकती है। ऐसे सैंकड़ो प्रयोग किए लेकिन यह भी सत्य है कि ऐसा कृत्य करते समय अलग–अलग समय लगता है इसका कारण उसके आस–पास क्या आभामण्डल है। यदि उसके पास कोई शंकित प्राणी है तो 5 घंटे, करूणामयी है तो 2 घंटे व श्रद्धावान हो तो 5 मिनट ही लगते है। ऐसे समय उसका क्रमशः 10 पौंड, 3 पौंड, 0 पौंड कम होता है। उसकी ऊर्जा कम हो जाती है, इसलिये वजन कम हो जाता है।

वैज्ञानिक बसिल्वों व कानिनियों ने कई प्रयोग कर यह कहा कि माइखलोवा जो कुछ कर ही है वह सत्य है तथा तथ्यात्मक है।

प्रत्येक मनुष्य अपने आस–पास अपना आभामण्डल लेकर चलता है। आभामण्डल मनुष्य पशु, पौधे के आस पास भी होता है। यह कहा जा सकता है कि सजीव–निर्जीव को परिभाषित करने के लिए आभामण्डल को देखा जाता है। जिसके आसपास आभामण्डल है वे सजीव और आभामण्डल न होने पर निर्जीव कहलाता है।

मनुष्य की हृदय की धड़कन बंद होने पर भी उसका आभामण्डल बंद या नष्ट नहीं होता वरन् तीन दिन तक आभामण्डल जीवित रहता है। उसकी वास्तविक मृत्यु तीन दिन बाद होती है। इसीलिए हमारें देश में तीसरा का इतना महत्व होता है। तीन दिन में मनुष्य को जीवित किया जा सकता है ; इसका भी मार्ग बना है, आविष्कार किए जा रहे है।

आभामण्डल को लेकर सन् 1930 में अंग्रेजी वैज्ञानिक ने ऐसा यंत्र बनाया है जिससे व्यक्ति के आभामण्डल का मूल्यांकन कर भविष्य में क्या घटित होगा, जानकारी हो सके।

ऐसा पढ़ा है कि विश्व युद्ध में 6 व्यक्ति मारे गए उनको निर्धारित समय में पुनर्जीवित किए गए। एक समय आएगा तब पुनर्जीवन देने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सकेगी।

अमरीकी वैज्ञानिक एडवर्ड कायस्की लम्बे समय तक सो जाता था अर्थात् समाधि ले लेता। उस समय उसने 10,000 भविष्यवाणियाँ की, सभी सत्य साबित हुई । उदाहरण है जिसको हम जानते है, वर्णन है कि 40 वर्ष बाद रूस में धर्म की क्रांति करने वाला सूर्य उदय होगा, ऐसे समय में नास्तिकवाद संगठित होकर सुव्यवस्थित रूप में धर्म को, मंदिरों को, गिरिजाघरों को नष्ट किए जा रहे थे ऐसे समय आस्तिकवादियों ने भीतर–भीतर अपनी योजना बनाते रहे, इसकी जानकारी स्टालिन को भी हो गई थी। उसकी मृत्यु के बाद धर्म पुनः जागृत हुआ । यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण है, मंत्र का प्रभाव है, समता–स्वभाव का फल है।

अभी वैज्ञानिक किरनाल द्वारा High Power Frequency Photography का विकास किया है जिसमें विचार के आधार पर आपका चित्र आ जाता है जैसे– एक व्यक्ति के हथेली का चित्र लिया जाता है, यदि उस व्यक्ति के विचार धनात्मक (Positive) है उसकी रेखा स्पष्ट, साफ, सुंदर, समानुपातिक होती है, यदि विचार ऋणात्मक (Negative) है तो रेखा–तिरछी व अस्पष्ट आती है।

इस चित्र के आधार पर भविष्य मे बिमारी आने की सूचना भी इंगित हो जाती है। इसका सम्बन्ध आत्मा से होता है। **मंत्र आभामण्डल को बदलने की प्रक्रिया है** यह मंत्र महामंत्र है। जिससे सभी पाप नष्ट हो जाते है अब प्रश्न यह है कि पाप कैसे नष्ट होता है। ऐसा वातावरण हो, आभामण्डल हो तो जहाँ पाप करना असम्भव हो जाता है, कैसे ? मंत्र की शक्ति से आभामण्डल रूपान्तरित हो जाता है। हत्यारा मंत्र पढ़ ले तो उसके आभामण्डल में परिवर्तन हो जाता है – उसमें अच्छे विचारों का उदय होता है, हत्या करने का विचार छोड़ देगा, पाप नहीं होगा नमन का भाव पैदा होगा – नमन का अर्थ है समर्पण । समर्पण से नमन का भाव होता है। नमन किसको किया जाए ?

जैन धर्म में नमन निम्न को किया गया है।

णमो अरिहंताणं : अरिहंत केवल शब्द नहीं है। अरिहंत वे है जिन्होंने क्रोध, काम, लोभ, मोह, माया अहंकार जैसे शत्रुओं को नाश कर विजय प्राप्त की। वे सब समाप्त हो गए।

अरिहंत शिखर है, मंजिल है। मंजिल प्राप्त करने के लिए मंत्र आधारशीला है। कुछ प्राप्त करने के लिए अपने आप को समाप्त कर दिया । अरिहंत कोई नाम नही है। जैन धर्म के मंत्र में किसी व्यक्ति को नमस्कार नहीं किया क्योंकि अरिहंत केवल जैन धर्म में ही नहीं हुए, अन्य धर्मों में भी हुए, उन सभी को नमन किया गया है जिन्होंने कर्म रूपी शत्रु को जीत लिया। यह सर्वांगीण, सर्व विकसित है।

अरिहंत नकारात्मक (Negativity) है इसलिए इनकी कोई सीमा नहीं है इनको शीर्ष (Top) पर रखा है। अतः अरिहंतो को नमस्कार

णमो सिद्धाणं : अरिहंत में नकारात्मक है जबकि सिद्धां में धनात्मक (Positivity), है सिद्धों ने पा लिया है, उपलब्धि प्राप्त की इसका अर्थ यह नहीं कि सिद्ध छोटा होता है।

सिद्ध छोटा नहीं होता। शून्य प्रथम है जो समाप्त हो गए है, वह प्रथम है सिद्ध भी अरिहंत हो सकते है, सिद्ध बोलते नहीं सिद्ध धनात्मक होते है। सिद्ध लोक के सर्वोच्च अग्रभाग पर अर्द्ध चन्द्राकार सिद्धशीला पर विराजते है । इस पर वे ही पहुँच पाते हैं जिन्होंने जीवन मरण से मुक्ति पा ली हो तथा इन्हें अवधि, व्याधि उपाधि से मुक्ति पा ली हो ऐसे सिद्धों को नमस्कार ।

णमो आयरियाणं : आचार्यों को नमस्कार – आचार्य ज्ञानी होते हे। ज्ञान परम सत्य है। उनके (आचार्यो के) आचरण से ही ज्ञात हो जाता है जो ज्ञान को जानते हैं, उस आचरण से ही जीते है और दूसरों को बताते भी है। आचार्य मौन भी रह सकता है उनके आचरण को हर साधारण व्यक्ति नहीं समझ सकता, नहीं जान सकता।

आचार्य ने जो पाया है वह आचरण से प्रगट भी करता है। मनुष्य का आचार्य से निकटता होती है। अतः आचार्यों को नमस्कार है। आचार्यो के 36 गुण होते है । इन गुणों का पालन करते हैं और सभी विकारा को रोकने में, त्याग करने में सक्षम होते हैं ।

णमो उवज्झायाणं : उपाध्यायों का नमस्कार कहा है। उपाध्याय – सीखता है, पढ़ता है और अन्य को भी सीखाता है, पढ़ाता है, अर्थात् ज्ञान होता है और ज्ञान लेता है। उपाध्याय स्वभाव से सरल होता है। उपाध्यायों को नमस्कार । इन्होंने शास्त्रों का अध्ययन किया है। ये प्रज्जवलित दीपक के समान है जो हमेशा प्रकाशमान होते है जिसकी याददाश्त कमजोर है उन्हें **ऊँ ह्रीं नमो णाणयस्स** या ऊँ णमो उवज्झायाणं की एक माला का जाप करना चाहिए ।

णमो लोए सव्वसाहूणं : लोक में जो भी साधु है, पूर्व में जो भी साधु हुए या भविष्य में होंगे और वर्तमान में है, सभी को नमस्कार । साधु–स्वभाव से सरल होता हे, हो सकता है, आचरण ही बोलता है, आचरण से नहीं भी बोले तो भी किसी को लाभ नहीं होगा वरण् हमकों ही लाभ होगा। साधु कुछ भी छिपाता है, कुछ भी गलत करता है तो भी उनको कुछ भी लाभ नहीं होगा इसके विपरीत नमन करने से लाभ हमको ही होगा। अगर हम नमन नहीं करते है तो हमारे में अहंकार की उत्पत्ति होगी। जो पापानुपाप का बंध होगा।

ऐसो पंच नमुक्कारों : ऐसे सभी पांचों को नमस्कार किया है।

सव्व पावप्पणासणो : यह मंत्र सब पापों का हरने वाला है

मंगलांणंच सव्वेसिं पढमं हवई मंगलं : यह मंत्र सभी प्रकार से मंगल करता है। मंगल करने में यह प्रथम मंत्र है।

मनुष्य का स्वभाव आचरण से तय होता है। महावीर के आचरण को छिपाने के लिए कुछ शेष रहता ही नहीं है लेकिन मनुष्य को तय करना कठिन है। महावीर ने दीक्षा अंगीकार कर स्व–कल्याण के लिए तप–साधना प्रारम्भ की। महावीर ने अपनी साधना में इतना लीन हो गए कि उनका शरीर व हड्डी का कोई वजन ही नहीं रहा तब उनके शरीर पर धारण किया गया वस्त्र कांटों में उलझ गया तो उन्होंने वस्त्र को आधा चीर (फाड़) दिया क्योंकि कपड़ा खींचने से पौधे पर लगे पत्ते, फूल आदि गिर जावेंगे जिससे अनेक

जीवों की हत्या हो जाएगी जिससे आधा वस्त्र जो शरीर पर था वह भी कहां व कब गिरा, ज्ञात नहीं हुआ ? महावीर नग्न हो गए। महावीर की नग्नता के लिए लोगों द्वारा महावीर पर पत्थर फेंके गए, गाँव से गाँव भगाया गया लेकिन महावीर समता भाव से सहन करते रहे। इसी नग्नता के कारण एक नया सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। इस प्रकार दो सम्प्रदाय (1) श्वेताम्बर (2) दिगम्बर।

महावीर नग्न नहीं थे, वस्त्र पहने हुए थे, वस्त्र छूट गए।

णमोकार मंत्र में मुख्य रूप से पांच को नमस्कार किया है जिससे इसको पंचमेष्टि मंत्र भी कहा जाता है।

धर्म एक विज्ञान है, विज्ञान ही नहीं वरन् परम विज्ञान (Supreme Science) है, इसका यह कारण है कि विज्ञान केवल भौतिक पदार्थों को स्पर्श कर समझा जा सकता है लेनिक परम विज्ञान में स्पर्श संभव नही। इसमें चेतना–आत्मा को रूपांतरित की जा सकती है। यही Supreme Science है। प्रत्येक जीव मनुष्य की तरह स्वतन्त्र नहीं है लेकिन पूर्वभव के शुभ–अशुभ कर्मों द्वारा सुख–दुख होता है। ज्योतिष–शास्त्र में नवग्रहों का वर्णन आता है जिसके आधार पर मनुष्य के कर्म गतिमान होते है और उसी के आधार पर सुख–दुख होता है। बालक के जन्म होते ही जन्मकुण्डली से मनुष्य के जन्म समय आकाश में विद्यमान सूर्य, चंद्र मंगल, बुध, गुरू, शुक्र आदि ग्रहों की स्थिति से नक्शा दिखाई देता है ये ही पूर्व भव के शुभ–अशुभ कर्म का घोतक है। जैन शास्त्र के अनुसार आत्मा चार प्रकार कर्म बांधती है (1) स्पृष्ट कर्म (2) बुद्ध कर्म (3) निधत्त कर्म (4) निकाचित कर्म – यह कर्म ऐसा है जो मनुष्य जानकार पाप कर गर्व महसूस करें।

(1) अज्ञानवश, बिना कोई प्रयोजन के हिंसा को स्पृष्ट कर्म कहते है।

(2) संयोगवश कोई कारण बनने पर दूसरे की इच्छा के अधीन हिंसा, पाप करने से बुद्ध कर्म होता है।

(3) दूसरों की इच्छा से स्वभाविक पाप करता है जैसे पुत्र की इच्छानुसार कार्य कर गर्व नहीं करता हो तो ऐसा पाप निधत्त कर्म होता है।

(4) यह ऐसा कर्म है जिससे मनुष्य जानकर अपने लाभ के लिए पाप करें और गर्व का अनुभव करे ऐसा निकाचित कर्म कहलाता है।

प्रथम तीनों कर्म को भोगने के लिए नियम नहीं है इसके लिए प्रायश्चित किया जा सकता है। चौथा कर्म के आधार ही अगला भव होता है।

कर्म का निर्धारण आभामण्डल द्वारा होता है। धर्मशास्त्रों में वर्णन है कि मनुष्य व देवता सभी अपने अपने कर्मों की गति से चलते है। स्वर्ग व नर्क की कल्पना भी इन कर्मों के फल के आधार पर की गई है।

अभी हाल में ही जयपुर के जे.के. लोन हॉस्पीटल ने यह स्पष्ट किया है कि नवजात शिशु के दिमाग को पढ़ा जा सकेगा। इससे शिशुओं में मानसिक विकार को जानकारी कर तत्काल उपचार किया जा सकेगा यह आभामण्डल के कारण संभव है।

महावीर ने कभी अपने को तीर्थंकर नहीं कहा यदि अरिहंत हमारे सामने भी हो तब भी हम सत्य नहीं मानेंगे, जांच करते रहेंगे। कभी हम गौशालक को तीर्थंकर कहेंगे, महावीर को नहीं। ऐसा करने से हमें क्या मिलेगा। यदि भगवान न भी हो तो नमन करने में क्या नुकसान होगा। कुछ नहीं।

दुनियां के किसी भी कौने में भगवान मिल जाए या भगवान दिख सके तो नमन (नतमस्तक) हो जाए। मुख्य बात है झुकने में। जब कोई भी झुक जाता है तो वह स्वयं बदल जाता है।

स्वयं के झुकने में है, स्वयं को समाप्त करने में है लेकिन अपने को महावीर में प्रवेश करने के पूर्व यह सोचना होगा कि हमारी मंजिल कहां है।

पहाड़ों में हिमालय ऊँचा है। नीचे खड़े होकर ऊँचाई को आसानी से देखा जा सकता है। वास्तविक परिचय नहीं होता। लेकिन चढ़कर देखने में उसका वास्तविक परिचय होता है।

जैसे शत्रुंजय पहाड़ के दर्शन नीचे से होते है लेकिन चढ़ाई चढ़ कर जाकर दर्शन करने में वास्तविक परिचय हो जाता है। चढ़ाई करने के लिए निर्धारित मार्ग से जाकर भगवान को पा सकते है, देख सकते है।

भगवान को प्राप्त करने के लिए निर्धारित मार्ग है **"नमोकार मंत्र"।** नमोकार मंत्र बोलते–बोलते उसमें डूब जाए तो आपके पास का आभामण्डल चाहे कैसा भी हो, रूपान्तरित होगा और पाप कर्म नष्ट होकर शुभ कर्म में वृद्धि होगी। एक दिन ऐसा आएगा जब अपनी मंजिल (मोक्ष) तक अवश्य पहुँचेंगे।

नमोकार मंत्र भगवान (मोक्ष) तक पहुंचने का एक सुगम मार्ग है।

णमोकार मंत्र ही वह अंतदृष्टि है जो हमें सीमा से असीमा की ओर ले जाता है। णमोकार मंत्र ही वह शिखर है और वह किनारा है जो हमें उस पार का मार्ग दिखाता है। णमोकार मंत्र का अपना मनोविज्ञान है तो अपने जीवन में आत्मसात कर हम विशिष्ट उपलब्धियों के मालिक हो सकते है।

जैसा कि हमने ऊपर स्पष्ट किया है कि णमोकार मंत्र बहुत सरल, सीधा है, इससे सरल रूप हो भी नही सकता। यह मंत्र सीधा मांगल्य भाव से पाप–मुक्ति से जोड़ता है।

मंत्र के जाप की तीन विधियाँ है जो इस प्रकार है – (1) भाग्य (2) उपांशु (3) मानस

भाष्य – जब इस मंत्र का उच्चारण करते हैं तब भाष्य कहलाता है। इसका उच्चारण होठों से बाहर होता है।

उपांशु – जब मंत्र का उच्चारण नहीं करते हैं वरन् मन ही मन में उच्चारण होठों के भीतर होता है।

जब मंत्र का भाष्य रूप से सिद्ध न हो तो तब तक उपांशु का उपयोग सिद्ध नहीं होगा।

मानस मन शांत व स्थिर हो और मन स्थिर होकर, एक स्थान व मंदिर में अर्थात् जिस वातावरण में बैठे हो या हो कहना चाहिए कि हम जिस अवस्था में बैठे हो और समीप का शुद्ध आभामण्डल हो तो ध्यानस्थ बैठकर और ऐसा प्रतीत होता हो कि मंत्र अपने आप मन में चल रहा है, यही **मानस मंत्र** कहलाता है और यही सबसे अधिक गहरा होता है।

अतः पहले मंत्र का उच्चारण व दूसरी स्थिति में मंत्र का स्मरण व तीसरी स्थिति में मंत्र का स्वरूप दिखाई देता है। यही **दर्शन, अंर्तदर्शन, अंतदृष्टि की स्थिति है।** मंत्र में इतना डूब जाए, रम जाए जिससे अंतदृष्टि द्वारा शिखर तक तीर्थंकर, ईश्वर तक पहुँच सकते हैं, इस विधि से भी भक्ति द्वारा तीर्थंकर (अरिहंत) तक पहुंचा जा सकता है।

साधना के लिए हम यहां पर दो उदाहरण प्रस्तुत करते है :–

(1) योगी सहजानंद। वे कंपकपाती सर्दी में नग्न बदन से बालू के टीले पर सो जाते थे और साधना में लीन हो जाते

(2) आचार्य श्री जगच्चंद्रसूरि जो तपती गर्मी में नदी की रेत पर बदन पर आंशिक वस्त्र पहनकर मंत्र की साधना करते थे। इसे तप–साधना के लिए महाराणा मेवाड़ ने ''तपा हिरला'' से विभूषित भी किया था। इस प्रकार हम साधना में णमोकार मंत्र का प्रयोग कर सकते या अन्य किसी मंत्र का। इस प्रकार णमोकार मंत्र के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकते है।

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

प. पू. प्राचीन शास्त्रोद्धारक वैराग्य देशनादक्ष आचार्य देव
श्रीमद् विजयश्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज सा.

एवं

वर्धमान तपोनिधि आचार्य देव
श्रीमद् विजयश्री कल्याण बोधिसूरीश्वरजी महाराज सा.
की प्रेरणा एवं सदुपदेश से वि. सं. 2073 में

श्री आम्बावाड़ी जैन संघ अहमदाबाद
की बहनों की ओर से
ज्ञान निधि की राशि में से सहयोग प्रदान किया गया।

श्री गांधीनगर जैन संघ अहमदाबाद
की बहनों की ओर से
ज्ञान निधि की राशि में से सहयोग प्रदान किया।

सहयोग प्रदान करने के लिए भूरी भूरी प्रशंसा, अनुमोदना व आभार

अनुमोदना अनुमोदना अनुमोदना

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

प. पू. आचार्य श्री विजयसोमचंद्र
सूरीश्वर जी म. सा. के
सदुपदेश व प्रेरणा
से

श्री रांदेर रोड जैन संघ सूरत

ने अपनी ज्ञान निधि में से
जैन मंदिरो के इतिहास व संकलन आदि
कार्यो में आर्थिक सहयोग प्रदान किया,
जिसकी भूरी भूरी प्रशंसा,
आभार

सहयोग प्रदान करने के लिए भूरी भूरी प्रशंसा, अनुमोदना व आभार

अनुमोदना अनुमोदना अनुमोदना

मैं वो मन्दिर हूँ जैनों का जिसकी आत्मा सिसक रही है

नींव तड़प रही है, दीवारें लचक गई है।
खम्भे आंसु छलकाते, शिलायें खिसक गई है।
मैं वो मन्दिर हूँ जैनों का जिसकी आत्मा सिसक रही है।
शान से पूजा होती थी, कभी भी मेरे इन द्वारों पर,
पूजन गायन होता था, घण्टी ढोल नंगाड़ों पर
कभी भरे थे मेरे आंगन, जनता और सरकारों से (दरबारों से)
गूँजता था तब आसमान भी जिनवर के जयकारों से ।
आज उसी प्रांगण में, गिलरियां फूदक रही है,
मैं वो मन्दिर हूँ जैनों का जिसकी आत्मा सिसक रही है।
पूर्वाचार्यों के चरणों से, कण-कण मेरा पवित्र हुआ,
मूनियों के दर्शन पाकर के मेरा चरित्र हुआ।
भूल गये सब साधु-श्रावक, मुझसे क्या अपराध हुआ ?
आ जाओ मुझे गले लगाने, अब भी नहीं बर्बाद हुए
करते प्रतिक्षा आपकी मेरी बाहें बिलख रही है,
मैं वो मन्दिर हूँ जैनों का, जिसकी आत्मा सिसक रही है।
कभी मुझे मूगलों शैवों ने तोड़ा काल से कभी कवलित हुआ,
किन्तु उनसे अधिक आज मैं, जैनों से ही व्यथित हुआ
मैंने सुना है जैन बन्धु पुनः वैसा सामर्थ्य पाये हैं।
मुझे बंदे को भूल के कितने नये मन्दिर बनवाये हैं।
यही सोचकर मेरी दोनों आँखे बरस रही है ...
मैं वो मन्दिर हूँ जैनों का जिसकी आत्मा सिसक रही हैं।

साभार : प्रमोद जैन (रठौड़ा)

अनुक्रमणिका

संदेश III-X
संपादक की कलम से XI-XII
सह संपादक के विचार XIII-XIV
सह संपादक का परिचय XV
लेखक की अभिव्यक्ति XVI-XVIII
लेखक परिचय XIX
सिरोही का इतिहास XX
सिरोही का नक्शा XXI
णमोकार मंत्र ही मोक्ष मार्ग XXII-XXVII
मैं वह मंदिर हूँ (कविता) XXX
श्री महावीर भगवान का मंदिर पिण्डवाड़ा 1–2
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा 3–7
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा 8
श्री शंत्रुंजय तीर्थ पट्ट मंदिर, पिण्डवाड़ा 9
श्री सीमन्धर स्वामी का मंदिर, पिण्डवाड़ा 10
श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा 11
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा 12
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, बसंतगढ़ 13–14
श्री जैन सरस्वती देवी का मंदिर, मार्कुण्डेश्वर 15
श्री महावीर भगवान का मंदिर, अजारी 16–18
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, जनापुर 19
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, झाड़ोली 20–23
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सिवेरा 24–25
श्री महावीर भगवान का मंदिर मालणुं (पाली) 26
श्री महावीर भगवान का मंदिर, बामनवाड़जी तीर्थ 27–32
श्री समवसरण एवं नवगृह मंदिर, बामनवाड़ 33
श्री महावीर भगवान का उपसर्ग मंदिर, बामनवाड़ 34
श्री आदिनाथ भगवान व आगम मंदिर, बामनवाड़ 35–36
श्री तीर्थेन्द्रसूरिजी गुरु मंदिर 37
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान मंदिर, बामनवाड़ 38
श्री कमल विजय जी म.सा. गुरू मंदिर 38
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर 39
श्री महावीर भगवान का मंदिर, उंदरा 40–41
श्री महावीर भगवान का मंदिर, नांदिया 42–43
श्री महावीर भगवान का उपसर्ग मंदिर, नांदिया 44–45
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नांदियां गाँव 46
आचार्य श्री प्रेमसूरि जी म.सा. का गुरु मंदिर 47
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, लोटाणा 48–49
श्री महावीर भगवान का मंदिर, वीरवाड़ा 50–51
श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, वीरवाड़ा 52–53
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, तेलपुर 54
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, नया सनवाड़ा 55
श्री महावीर भगवान का मंदिर, बालदा 56–57
सिरोही का इतिहास 58
श्री आचलिया आदीश्वर भगवान का मंदिर 59
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर 60
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 61
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर 62
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर 63–64
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 65
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 66
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर (छोटा) 67
श्री महावीर भगवान का मंदिर 68
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर 69
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 70
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 71
श्री शीतलनाथ भगवान (बड़ा) मंदिर 72
श्री आदीश्वर भगवान चतुर्मुखी (चौमुखाजी) मंदिर 73–74
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 75
श्री शूलपाणियक्ष मंदिर 76
श्री महावीर भगवान का शूलपाणियक्ष मंदिर 76
श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 77
श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 78
श्री केसरियाजी का मंदिर 79
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर 80
श्री महावीर भगवान का मंदिर व दादावाड़ी (थूब की वाड़ी) 81
श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान व गुरू मंदिर 82
श्री अजितनाथ पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (शांतिनगर) 83–86
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सिद्धरथ 87
श्री शांतिनाथ भगवान का मन्दिर, धान्ता 88
श्री अनंतनाथ भगवान का मन्दिर, डोडुआ 89
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, डोडुआ 90
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मीरपुर 91
श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ भगवान मंदिर, मीरपुर 92–94
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान 95
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 96
श्री महावीर भगवान का मंदिर, मीरपुर 97–99

श्री महावीर भगवान का मंदिर वेलांगरी (वेलारगिरी) 100–101
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, सेलावाड़ा 102
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, कृष्णगंज (मेड़ा) 103–104
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, कृष्णगंज (पावापुरी) 105
श्री महावीर भगवान का मंदिर, पावापुरी 106
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, सानवाड़ा 107
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर सिरोड़ी (केवल बाग) 108
श्री ह्रींकार पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सिरोड़ी 109
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, पामेरा 110
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, पोसिनारा 111
श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गुलाबगंज (पालड़ी) 112
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, मालगाँव 113–114
श्री आदिनाथ भगवान मंदिर अनादरा (हणाद्रा) 115–118
श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अनादरा (भेरू तारक) 119–120
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, डबाणी 121
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर डाक 122
श्री महावीर भगवान का मंदिर, धवली 123
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सनपुर 124
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर आमलारी 125
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सियाकरा 126
श्री त्रिलोक विजय जी म.सा. का गुरूमंदिर, करोती 127
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लुणोल 127
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, केर 128–129
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कोलरगढ़ 131–132
श्री महावीर भगवान का मंदिर, पालड़ी (एम.) 133
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भेव 134–135
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर अरठवाड़ा 136
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, जोगपुरा (नया) 137
श्री सामलिया पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, जोगपुरा (पुराना) 138
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, आल्पा 139
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पोसालिया 140
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, वागसीन 141–142
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सुखधाम 143–144
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अन्दोर 145–146
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, उथमण 147–148
श्री महावीर भगवान का मंदिर, राड़वर 149
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर, जोयला (पुराना) 150
शिवगंज के मंदिर 151
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 152
श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (कसोटी का मंदिर) 153
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर 154
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर 155
श्री महालक्ष्मी का मंदिर 156
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर 156
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, बड़गांव 157
श्री आदीश्वर भगवान का शिखरबंद मंदिर 158
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 159
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर व दादावाड़ी मंदिर 160
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, दादावाड़ी 161
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर व गुरू मंदिर 161
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर 162
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर 163
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर 164
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर 164
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, बड़गाँव 165
श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर, बड़गाँव 166–167
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, पेशुआ 168
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पेशुआ 169–170
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कोजरा 171
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, लाज 172
श्री घंटाकर्ण महावीर भगवान का मंदिर, लाज 173–174
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, धनारी 175–176
गुरू मंदिर भाटावेल बेरा कुंआ, दादावाड़ी (धनारी) 177–178
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, नीतोड़ा 179–180
श्री महावीर भगवान का मंदिर, दियाणा 181–183
श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रोहिड़ा 184
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर रोहिड़ा 185
श्री महावीर भगवान का मंदिर 186–188
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, नानरवाड़ा 189–190
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, वाटेरा 191–192
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, वासा 193–194
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, वासा 195–198
श्री कछुलिका पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, काछोली 199–200
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, भांवरी 201
श्री कुंथुनाथ भगवान भगवान का मंदिर, स्वरूपगंज 202

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, स्वरूपगंज 203
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, भीमाणा 204
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भारजा 205–206
श्री मनमोहन चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, कींवराली 207–208
श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, आमथला 209
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, ओर 210–211
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, डेरणा 212–213
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, देलदर 214–215
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कासीन्द्रा 216–217
जैन मंदिर, चन्द्रावती नगरी 218
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, आबूरोड़ 219
श्री पार्श्व पदमावती मंदिर, आबूरोड़ (मानपुर) 220
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, आबू रोड़ (मानपुर) 221
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, सांतपुर 222
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मानपुर 223–224
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मानपुर (आबूरोड़) 225
श्री महावीर भगवान का मंदिर, मूंगथला 226–229
श्री सीमन्धर स्वामी का मंदिर, दत्ताणी 230–231
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, भटाणा 232
श्री महावीर भगवान का मंदिर, वरमाण 233–235
श्री महावीर भगवान का मंदिर, मण्डार 236–237
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, मण्डार 238–243
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर व दादावाड़ी, मण्डार 242
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर विजयपताका (मण्डार) 243
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर जीरावला 244–255
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, निम्बज 256
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दांतराई 257
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, दांतराई 258
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, सीलदर 259
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, रेवदर 260
श्री महावीर भगवान का मंदिर, सिरोड़की 261
श्री सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सिरोड़की 262
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, मीर माण्डवाड़ा 263
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर, जेला 264
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, चाडुआल 265
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर तीवरी 265
श्री जिनेश्वर (पार्श्वनाथ) भगवान का मंदिर कल्पगारा 265
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर मारोल 265
लोदरी गांव 265
आबू पर्वत के जैन मंदिरों की प्राचीन कलाकृतियाँ 266
गुरूमंदिर, शांति आश्रम तीर्थ 267
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर आरणा 268
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, ओरीया 268
गुरू मंदिर, गुरूशिखर–आबू 268
गुरू मंदिर – सूर्यास्त दर्शन मार्ग – आबू 268
अचलगढ़ के जैन मंदिर 269–274
योगीराज श्री शांतिसूरिजी म.सा. का गुरू मंदिर, अचलगढ़ 274–277
आबू पर्वत (देलवाड़ा) का इतिहास 278
आबू पर्वत पर स्थित जैन मंदिर 279–300
श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर (लूणवसहि), देलवाड़ा 301–302
श्री महावीर भगवान का मंदिर, देलवाड़ा 303–325
श्री पार्श्वनाथ (चतुर्मुखी) भगवान का मंदिर, (खरतरवसहि मंदिर), देलवाड़ा 326
श्री नवफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गोहिली (गोयली) 327–331
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, पाडीव 332
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर 332
श्री महावीर भगवान का मंदिर, कालन्द्री 333
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, कालन्द्री 334
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कालन्द्री 335
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कालन्द्री 335
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोहब्बतनगर (मोटागांव) 336
श्री सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोहब्बतनगर (मोटागांव) 337
श्री रिषभदेव भगवान का मंदिर, मोहब्बतनगर (मोटागांव) 337
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोहब्बतनगर 338
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, फूंगणी 339
श्री आशापूरण पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, नून 340
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर मडिया (मारिया) 340
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर बरलूट 341
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, बरलूट 342
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, माण्डवारा 343

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, उड़ 343
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, उड़ 344
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, जावाल 345–346
जवाल नगर 347
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 347
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 347
श्री सतखण्डा पाटबंध पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 347
श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर 348
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर 348
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर 348
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 349
श्री मुनिसुमतिनाथ भगवान का मंदिर, जवाल 349
श्री सच्चियां देवी का मंदिर 350
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर मण्डवारिया 351
श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर 352
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 352
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 353
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, देलदर 354
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, वराड़ा 355
श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, वराड़ा 356
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर मनोरा (मणोरा) 357
श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर, भूतगांव 357
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, जमोतरा 358
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर मांडाणी 359
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, नारादरा 360
योगीराज शांतिसूरिजी का गुरू मंदिर, मणादरा 361–363
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कैलाशनगर 364
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कैलाशनगर 364–365
मध्यकालीन राजस्थान में जैन धर्म 366–368
जैन धर्म में मूल्य 368–371
गोरवाड़ क्षेत्र का इतिहास 372
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, जेतपुरा 373
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, बलाना 374
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर,
फालना (स्वर्ण मंदिर) 375
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, फालना 375
श्री सर्वोदय पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 376
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ का चर्तुमुखी मंदिर 376
श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर 377
श्री आदिनाथ भगवान का शाश्वत चौमुखाजी मंदिर 377
श्री केशरिया जी का मंदिर 377
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर एवं दादावाड़ी 378
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर खुड़ाला (स्वर्ण मंदिर) 379
श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर बाली 380
श्री मनमोहन पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 381
श्री चंद्रप्रभ भगवन का मंदिर 381
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर 382
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 382
श्री मणिभद्र मंदिर 382
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर 383
श्री गौतम स्वामी का मंदिर 383
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर 383
श्री सूरिमंत्र मंदिर 384
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सेवाड़ी 385
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, सेवाड़ी 386–387
श्री माणिभद्र जी का मंदिर 387
श्री सुसवाणी माता मंदिर 388
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर लूणावा 388
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लुणावा 389
श्री वासूपूज्य भगवान का मंदिर, दादावाड़ी 389
श्री महाप्रज्ञ भगवान का मंदिर 390
श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर,
भद्रंकरनगर 391
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सेसली 392
श्री राता महावीर तीर्थ (हथुण्डी) 393–395
श्री महावीर भगवान का मंदिर 396
मुण्डारा 397
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 397
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 397
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर 398
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर 398
श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 398
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, आनन्दधाम
(रमणिया) 399
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (अष्टापद)
राणी 400–401
अष्टापद चित्र 401
श्री वरकाणा पार्श्वनाथ तीर्थ का वर्णन 402–403
श्री नाड़ोल तीर्थ का वर्णन 404–405
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर 405
श्री पद्मप्रभ भगवान का मंदिर 406
श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर 407
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 408

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर 408
नाडोल की ऐतिहासिकता 409–410
नाडोल के मंदिर के प्राचीनता के लेख 410
श्री नारलाई तीर्थ का वर्णन 411
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 412
श्री अजितनाथ भगवान 413
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर 413
श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 413
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 414
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर 414
श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर 414
श्री साँगटिया पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 415
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर 415
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 416–417
श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर (गिरनार तीर्थ) 417–420
सादड़ी का इतिहास : सादड़ी तीर्थ का वर्णन 421
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 421
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 422
श्री महावीर भगवान का मंदिर 422
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर एवं
श्री जिनदत्तसूरि जी दादावाडी 422
श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर 423
श्री महावीर भगवान का मंदिर 423
श्री ऋषभदेव भगवान का चतुर्मुखी मंदिर 423
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर 424
श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 424
श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर 424
श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर 425
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर 425
श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर 425
श्री अंबिका देवी की प्रतिमा 426
श्री सरस्वती देवी का मंदिर 426
श्री चक्रेश्वर देवी का मंदिर 426
आचार्य श्री पूर्णानंदसूरि गुरू मंदिर 426
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 427
श्री मादा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 427
श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 427
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
(मुक्ति धाम) 428
श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर, रणकपुर 429
श्री नेमिनाथ भगवान का शिखरबंद मंदिर 429
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, आना 430
श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, आना 431
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, केनपुरा 432
श्री महावीर भगवान का मंदिर नेतरा 432
घाणेराव का इतिहास एवं मंदिर 433
श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर 433
श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर 434
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 434
श्री जीरावला पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 434
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 435
श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर 435
श्री अभिनंदन भगवान का मंदिर 435
श्री केशरिया जी (आदिनाथ भगवान) का मंदिर 436
श्री धर्मनाथ भगवान का मंदिर 436
श्री चौमुखा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, ज्ञान मंदिर 436
श्री नव नाकोड़ा (कीर्ति स्तंभ) 437
श्री आदिनाथ भगवान का गृह मंदिर 437
श्री हिमाचलसूरि दादावाड़ी 438
श्री रिद्धि सिद्धि गजानन मंदिर, मुछाला 438
श्री महावीर भगवान का मंदिर, मुछाला महावीर 439
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर देसुरी 440
श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर 441
श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर 441
श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर 441
श्री क्षेत्रपाल मंदिर (खेतलाजी), सोनाणा 442–443
श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, बाबा 443
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बागोल 444
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर,
बागोल 445–446
संदर्भित पुस्तकों की सूची (लेखकों/प्रकाशकों
का आभार) 447
जैन धर्म की प्राचीनता 448–449
न्यायालयों के निर्णय 450
जैन धर्म की प्राचीनता के सम्बन्ध में
महापुरूषों के विचार 451
जैन शास्त्रों व मान्यताओं के आधार 452
विहरमान 453
आगामी चौबीसी के 63 शलाका पुरूष 454
अढ़ी द्वीप (अढ़ाई द्वीप) ढाई द्वीप 455
अढ़ाई द्वीप (मनुष्यलोक) 456
जम्बू द्वीप 457
महाविदेह क्षेत्र 458
मेरू पर्वत (वन गतिशील, ज्योतिष चक्र) 459–460

मेवाड़ तीर्थाधिपति श्री केशरियाजी (ऋषभदेव)